हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

डाक पंजीकरण संख्याः एच.पी./42/एस.एम.एल. 2009 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

वर्ष 32 अंक 36 शिमला, 9–15 जून, 2010 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपये वार्षिक 140 रुपये आजीवन 1500 रुपये website : himachalpr.gov.in/giriraj.asp

घर बैठे गिरिराज पाइये

आप गिरिराज के आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं तो 1500 **रुपये** का बैंक ड्राफ्ट **निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क, शिमला**-2 के पक्ष में बनाएं व इसे गिरिराज कार्यालय में भेजें। यदि आप वार्षिक सदस्य बनना चाहते हैं तो 140 रुपये का बैंक ड्राफ्ट या एम.ओ. **सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, शिमला**-171005 के नाम से भेजें। पते में पिन कोड एवं दूरभाष या मोबाइल नं. लिखना न भूलें।

इस अंक में

कृषि/बागबानी/विकास...	5
आस्था/संस्कृति/विविध...	6
विविध...	7
साहित्य...	8
महिला/बाल जगत/स्वास्थ्य ...	9
पहाड़ी पृष्ठ	10

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में जल प्रबन्धन बोर्ड की प्रथम बैठक की अध्यक्षता करते हुए

जल प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहन–मुख्य मंत्री

जल प्रबंधन बोर्ड की प्रथम बैठक आयोजित

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार पारम्परिक तरीके से जल प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करेगी। मुख्यमंत्री गत दिनों शिमला में जल प्रबंधन बोर्ड की प्रथम बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों के लोग पारम्परिक तरीके से जल भण्डारण में दक्ष हैं। उन्होंने कहा कि पहले पारम्परिक जलस्रोत गांवों की पानी की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, लेकिन पाइपों के माध्यम से जलापूर्ति की सुविधा मिलने के बाद इनका इस्तेमाल लगभग बंद हो चुका है। घटते भू-जल स्तर के दृष्टिगत प्रदेश सरकार ने सामुदायिक अभियान के अंतर्गत सभी पारम्परिक जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग पारम्परिक जल स्रोतों के प्रबंधन में कुशल हैं तथा उनकी इस दक्षता को जल स्रोतों को पुनः उपयोग में लाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। इससे न केवल स्थानीय लोगों की जलापूर्ति सुनिश्चित होगी बल्कि जल स्रोत भी पुनः उपयोग के योग्य बनेंगे। इसके साथ-साथ जन सेवाओं को अपना मानने की प्रवृत्ति से जहां एक ओर जल स्रोतों का रख-रखाव सुनिश्चित होगा वहीं पानी की बर्बादी पर भी अंकुश लगेगा।

प्रो. धूमल ने कहा कि राज्य सरकार ने सभी नए सार्वजनिक तथा निजी भवनों में वर्षा जल संग्रहण को अनिवार्य बनाया है और इस प्रणाली को पुराने भवनों में स्थापित करने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्षा जल को सबसे शुद्ध माना जाता है और यह पीने के सर्वथा योग्य है। हालांकि प्रदेश के सभी जनसंख्या गांवों में जलापूर्ति योजनाओं का सुदृढ़ नेटवर्क तैयार किया गया है, किंतु वर्षा के अभाव में जल स्रोतों के सूखने और घटते भू-जल स्तर के कारण कई योजनाएं बंद हो गई हैं। उन्होंने कहा कि सभी व्यक्तियों को अपने दैनिक क्रियाकलापों में पानी के दुरुपयोग से बचना चाहिए ताकि पानी की प्रत्येक बूंद को बचाया जा सके। मौसम में बदलाव और (शेष पृष्ठ 11 पर)

राज्य नदी घोषित करने का सुझाव

रमन मेगासैसे पुरस्कार विजेता श्री राजेंद्र सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए हिमाचल प्रदेश में जल प्रबंधन के क्षेत्र में जन सहभागिता बढ़ाने, भू-जल मैपिंग प्रणाली आरंभ करने और राज्य की एक नदी को राज्य नदी घोषित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जल प्रबंधन गतिविधियों में भू-सांस्कृतिक विविधता डिजाइन को अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में अपार जल विद्युत क्षमता उपलब्ध है जिसे संरक्षित कर भावी पीढ़ियों के लिए उपयोग में लाया जाना चाहिए। उन्होंने राजस्थान में जल संरक्षण के क्षेत्र में अर्जित की गई उपलब्धियों का ब्योरा दिया।

ऐतिहासिक गांव पर्यटन की दृष्टि से विकसित होंगे

कहानी, हर घर कुछ कहता है तथा होम स्टे योजनाओं की सराहना

हिमाचल पर्यटन ने इस वित्त वर्ष के दौरान राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में 10 प्रतिशत का योगदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह जानकारी गत दिनों शिमला में मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने केन्द्रीय पर्यटन, आवास एवं शहरी ग़रीबी उन्मूलन मंत्री कुमारी शैलजा के साथ एक बैठक के दौरान दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में गत वित्त वर्ष के दौरान पर्यटन क्षेत्र से 8.5 प्रतिशत जी.डी.पी. का लक्ष्य हासिल किया तथा इस दौरान 11.40 मिलियन देशी एवं विदेशी पर्यटकों ने प्रदेश का भ्रमण किया। प्रदेश में 2090 पंजीकृत होटल इकाइयां कार्यरत हैं, जिनमें 50 हजार व्यक्तियों के रहने और सोने की व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में धनाढ्य वर्ग के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए आधारभूत अधोसंरचना सृजित की जा रही है। उन्होंने कहा कि पर्यटन विभाग द्वारा आरंभ की गयी 'हर गांव की कहानी' योजना लोकप्रिय हो रही है और पर्यटक इस योजना के माध्यम से प्रदेश के गांव का इतिहास जानना चाहते हैं। इस योजना का उद्देश्य प्रदेश के ऐतिहासिक महत्व के गांवों को पर्यटक गांव के रूप में विकसित कर वहां सुविधाओं का सृजन करना है। उन्होंने (शेष पृष्ठ 11 पर)

'हर गांव की कहानी' योजना का शुभारम्भ

हिमाचल प्रदेश में गत दिनों महत्वाकांक्षी 'हर गांव की कहानी' योजना का शुभारंभ किया गया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में आने वाले पर्यटकों को यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रदेश के गांव के ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत करवाना है। योजना का शुभारंभ शिमला से 25 कि.मी. दूर खुशाला गांव में केन्द्रीय पर्यटन, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम मंत्री कुमारी शैलजा ने किया।

इस अवसर पर कुमारी शैलजा ने कहा कि सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक तथ्यों का संरक्षण हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि इस योजना को आरंभ करके हिमाचल प्रदेश सरकार ने सराहनीय कार्य किया है। इससे पूर्व, केन्द्रीय मंत्री कुमारी शैलजा ने पर्यटन विभाग द्वारा कंडाघाट के होटल डेस्टिनेशन में आयोजित 'हिमाचल हाट' मेले का शुभारंभ भी किया। कुमारी शैलजा ने कहा कि प्रदेश में प्राकृतिक, धार्मिक और अन्य पर्यटक स्थलों को विकसित किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिमला-ठियोग-नारकण्डा पर्यटन सर्किट के लिए 7.50 करोड़ रुपये, जुब्बल-कोटखाई पर्यटन सर्किट (शेष पृष्ठ 11 पर)

खाद पर बढ़ी कीमत वहन करेगी सरकार

3.50 करोड़ का वार्षिक अंतरीय मालभाड़ा वहन करेगी सरकार

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा है कि प्रदेश सरकार यह सुनिश्चित बनाएगी कि मिश्रित खादों पर मालभाड़ा सहायता में केन्द्र सरकार द्वारा की गई कटौती का नुकसान किसानों को न उठाना पड़े। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बढ़ी हुई कीमत को स्वयं वहन करेगी, जिससे प्रदेश के किसानों को पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध हो सके। रेल रैक प्वाइंट से खण्ड स्तर के गोदामों तक खाद पहुंचाने के लिए लगभग 3.50 करोड़ रुपये का वार्षिक बढ़ा मालभाड़ा प्रदेश सरकार वहन करेगी। केन्द्र सरकार ने पोषक तत्वों पर आधारित अनुदान नीति के तहत मिश्रित खादों पर माल भाड़ा अनुदान को 4 रुपये 13 पैसे प्रति मी.टन प्रति किलोमीटर के हिसाब से 850 प्रति मीट्रिक टन से घटाकर 300 रुपये प्रति मी.टन कर दिया है। केन्द्र सरकार के इस निर्णय से प्रदेश को नुकसान होगा क्योंकि रेल रैक प्वाइंट से खंड के गोदाम काफी दूर हैं तथा इस निर्णय से प्रदेश को करीब 3.50 करोड़ रुपये का वार्षिक नुकसान होगा। मुख्य मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार पहले ही खंड गोदामों से खाद थोक विक्रेताओं तक पहुंचाने के लिए परिवहन कीमत का भार उठा रही है, जोकि वार्षिक 3 करोड़ रुपये है। उन्होंने कहा कि खाद कम्पनियां कम (शेष पृष्ठ 11 पर)

रोहतांग सुरंग का शिलान्यास 28 जून को

रोहतांग सुरंग का शिलान्यास 28 जून, 2010 को किया जाएगा। केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री ए.के. एंटनी ने गत दिनों मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल को दूरभाष कर उन्हें इस अवसर पर आमंत्रित किया है। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री उमर अब्दुला के भी इस अवसर पर शामिल होने की संभावना है। श्री एंटनी ने मुख्यमंत्री से परियोजना के कार्य निष्पादन के लिए हर संभव सहायता देने का आग्रह किया है। प्रो. धूमल ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना के शिलान्यास का समय निर्धारित करने के लिए केन्द्रीय रक्षा मंत्री का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और प्रदेश के लोगों, (शेष पृष्ठ 11 पर)

जैविक खेती से पुनर्जीवित होगा चाय उद्योग

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में चाय उद्योग को जैविक खेती के माध्यम से पुनर्जीवित करेगी और इस कार्य के लिए चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में 150 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर एक चाय बागान स्थापित किया जाएगा। मुख्यमंत्री गत दिनों शिमला में केंद्रीय वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री ए.के. मंगोतरा, भारतीय चाय बोर्ड के अध्यक्ष श्री वासुदेवा और भारतीय स्पाइस बोर्ड के अध्यक्ष श्री कुरियन के साथ एक बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार चाय प्रेमियों के मध्य कांगड़ा चाय को लोकप्रिय बनाने, इसका पेटेंट कराने और चाय उत्पादकों को चाय बागान बढ़ाने के लिए प्रयास कर रही है, जिससे वे अधिक उपज प्राप्त कर सकें। बेकार पड़े चाय बागानों को पुनर्जीवित करने के साथ-साथ राज्य सरकार भारतीय चाय बोर्ड के सहयोग से चम्बा तथा मण्डी जिलों में चाय उत्पादन की संभावनाओं का पता लगाएगी, क्योंकि इन जिलों का मौसम चाय उत्पादन के लिए अनुकूल है। उन्होंने कहा कि इन तीन जिलों में सर्वेक्षकों द्वारा 7700 हैक्टेयर भूमि चिन्हित की गई है, जहां अच्छी गुणवत्ता के जैविक चाय बागान विकसित किए (शेष पृष्ठ 11 पर)

चाय पौधरोपण के अंतर्गत क्षेत्र बढ़ाने की आवश्यकता

राज्य सरकार प्रदेश में जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है और किसानों को बेहतर विपणन सुविधाएं उपलब्ध करवायी जा रही हैं, ताकि उन्हें कृषि उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त हो सके। यह जानकारी मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने गत दिनों कांगड़ा चाय को पुनर्जीवित करने तथा हमीरपुर में 'स्पाइस पार्क' स्थापित करने के लिए बुलाई गई बैठक को संबोधित करते हुए दी। मुख्य सचिव ने कहा कि प्रदेश में चाय उद्योग को पुनर्जीवित करने के लिए राज्य सरकार ने कई प्रभावी कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में चाय पत्ती की खेती के अधीन बेकार पड़ी 1200 (शेष पृष्ठ 11 पर)

पत्रकारिता की स्वतन्त्रता संग्राम में अहम् भूमिका–प्रो. धूमल

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि मीडिया सहित समाज का प्रत्येक वर्ग आज विश्वसनीयता के संकट से जूझ रहा है। उन्होंने कहा कि समाप्त हो चुके मूल्यों को पुनर्स्थापित करके ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। मुख्य मंत्री गत दिनों शिमला में देव ऋषि नारद जयन्ती के अवसर पर विश्व संवाद केन्द्र शिमला द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। स्वतंत्रता संग्राम में समाचार पत्रों की भूमिका के विषय में बोलते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि पत्रकारिता की ताकत ने ही भारतीय जनमानस में देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता की भावना को समाहित किया और इन्हीं भावनाओं ने अन्तत: देश को स्वतंत्र करवाया।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में विश्व संवाद केन्द्र द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मान समारोह के दौरान वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार श्री पी.एन. शर्मा को सम्मानित करते हुए।

मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर मीडिया में व्यवसायीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति और व्यक्ति विशेष के विचारों को प्रचारित करने के लिए समाचार पत्रों में स्थान बेचने की प्रवृत्ति पर भी चिंता जताई।

प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि विकासात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने विकासात्मक पत्रकारिता के लिए पुरस्कारों की स्थापना की है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर दिये जाने वाले पुरस्कार के अन्तर्गत 50 हजार रुपये, राज्य स्तर पर दिए जाने वाले पुरस्कार के तहत 40 हजार रुपये और जिला स्तर पर दिये जाने वाले पुरस्कार के तहत 25 हजार रुपये दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इस वर्ष से राज्य सरकार ने इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए भी पुरस्कार स्थापित किया है। राष्ट्रीय टेलीविजन नेटवर्क पर दिखाई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ स्टोरी के लिए 40 हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर वयोवृद्ध स्वतंत्र पत्रकार श्री पी.एन. शर्मा, अंग्रेजी समाचार पत्र हिन्दुस्तान टाइम्स की ब्यूरो चीफ श्रीमती अर्चना फुल्ल, दूरदर्शन केन्द्र शिमला के ब्यूरो चीफ श्री शिशु शर्मा शांतल, दैनिक भास्कर के पत्रकार श्री मुनीश बनियाल और स्वतंत्र छायाकार श्री अनिल दयाल, को 'देव ऋषि नारद सम्मान' प्रदान किया। मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर समाचार पत्रों के लिए लिखने वाले कुछ लेखकों को भी सम्मानित किया।

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं जन संचार विश्वविद्यालय भोपाल के उप कुलपति प्रो. बृज किशोर कुठियाला ने इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हित की प्राप्ति, सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और मानवीय मूल्यों की रक्षा करना है। दैनिक ट्रिब्यून समाचार पत्र के पूर्व सहायक संपादक श्री अशोक मलिक ने अध्यक्षीय भाषण दिया। मुख्य राज्य प्रचारक श्री नरेन्द्र शर्मा ने मुख्य मंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि पत्रकारों को सम्मानित करने का यह पहला प्रयास है। राज्य सभा सांसद श्रीमती बिमला कश्यप भी इस अवसर पर उपस्थित थीं।

राज्य में खुलेगा क्षेत्रीय शहरी प्रबन्धन संस्थान

हिमाचल प्रदेश में एकीकृत एवं सतत् शहरीकरण विषय पर लोक प्रशासन संस्थान शिमला में गत दिनों दो दिवसीय सेमीनार आयोजित किया गया जिसका शुभारम्भ केन्द्रीय आवास, शहरी गरीबी उन्मूलन तथा पर्यटन मंत्री कुमारी शैलजा ने किया।

इस अवसर पर कुमारी शैलजा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय शहरी प्रबन्धन संस्थान खोला जाएगा, जिसके लिए 40 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गयी है। यह संस्थान शहरी प्रबंधन एवं आवास निर्माण के बारे में देश के सभी पहाड़ी राज्यों को महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाएगा, जिससे न केवल हिमाचल प्रदेश, बल्कि उत्तराखंड, जम्मू और कश्मीर तथा देश के उत्तर-पूर्वी राज्य लाभान्वित होंगे।

केन्द्रीय आवास, शहरी गरीबी उन्मूलन तथा पर्यटन मंत्री ने कहा कि आवास क्षेत्र का विकास केन्द्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और देश के सभी राज्यों को बढ़ते शहरीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार होना होगा। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार जवाहर लाल नेहरु शहरी नवीकरण मिशन के अंतर्गत आवासहीन व्यक्तियों के लिए 15 लाख घर निर्मित करने की योजना बना रही है। वर्तमान में शिमला सहित 65 शहर इस मिशन में सम्मिलित किए गए हैं। कुमारी शैलजा ने कहा कि देश में शहरी गरीबों तथा झोंपड़ पट्टियों में निवास करने वाले व्यक्तियों को आवास प्रदान करने पर 36 हजार करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने हिमाचल प्रदेश के लिए 8 आवासीय योजनाएं स्वीकृत की हैं।

प्रदेश के परिवहन, शहरी विकास तथा नगर नियोजन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने कहा कि देश और प्रदेश में शहरों में भीड़ हद से ज्यादा बढ़ गयी है और अब शहरों में और अधिक निर्माण संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण से निपटने के लिए उचित योजना आवश्यक है। राज्यसभा सांसद श्रीमती बिमला कश्यप, विधायक श्री गंगूराम मुसाफिर तथा राज्य सरकार के उच्च अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया।

बाल आश्रमों के बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण का प्रावधान

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में बताया कि प्रदेश सरकार ने विभाग एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से आवश्यकतानुसार राज्य के विभिन्न स्थानों पर 19 बाल एवं बालिका आश्रम स्थापित किए हैं, जिनका उद्देश्य अनाथ व असहाय बच्चों को आश्रय प्रदान कर, उन्हें शिक्षा, रहन-सहन, भोजन तथा स्वास्थ्य इत्यादि की सुविधाएं उपलब्ध करवाना है। प्रवक्ता ने कहा कि वर्ष 2007- 08 से इन आश्रमों का संचालन मुख्य मंत्री बाल उद्धार योजना के तहत किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत आश्रम छोड़ने पर ऐसे बालकों व बालिकाओं, जिन्होंने दसवीं या 12वीं कक्षा पास कर ली हो, को उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध करवाने का प्रावधान है। वर्ष 2009-10 में बाल आश्रम टूटीकण्डी के 19 आवासियों को विभिन्न औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में आई.टी तथा ई.एस. एम. मोटर मैकेनिक, वैल्डर, सर्वेयर, इलैक्ट्रॉनिक व्यवसायों में प्रशिक्षण के लिए प्रवेश दिलवाया गया है, जिन पर 8,05,000 रुपये व्यय किए गए हैं। इसके अतिरिक्त बालिका आश्रम मशोबरा की 14 आवासियों को हिमाचल प्रदेश महिला विकास निगम के माध्यम से ब्यूटी पार्लर एवं फैशन डिजाइनिंग जैसे व्यवसायों में प्रशिक्षण दिलवाया गया है, जिस पर विभाग द्वारा 1,05,000 रुपये व्यय किये गये हैं।

उन्होंने कहा कि इस वित्त वर्ष के दौरान बाल आश्रम, टूटीकण्डी के 09 आवासियों एवं बालिका आश्रम मशोबरा की 14 आवासियों को सुजोग (स्किल अपग्रेडेशन विद जॉब/आउटसोर्सिंग गारंटी) योजना के तहत बद्दी-बरोटीवाला-नालागढ़ औद्योगिक संघ के माध्यम से फार्मा, टैक्सटाईल एवं पैकेजिंग उद्योगों में प्रशिक्षित करने के लिए चयनित किया गया है। प्रशिक्षण के दौरान विभाग आवासियों को 1500 रुपये प्रतिमाह तक छात्रवृत्ति दिए जाने के साथ ही प्रशिक्षण पर होने वाला 2,000 रुपये मासिक व्यय भी वहन करेगा, जिस पर कुल 4,38,000 रुपये व्यय होंगे।

स्वयं सहायता ने दिखाई आत्मनिर्भरता की राह

राज्य के विकास में महिलाएं, पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। ग्रामीण महिलाओं ने आज अपनी मेहनत से विकास के अनेक क्षेत्रों में नाम कमाया है।

सोलन जिले के अर्की उपमण्डल की एक पंचायत है छामला, जिसके अन्तर्गत तीन गांव छामला, कुनकुनु और पनसोड़ा आते हैं। इन तीन गांवों की जनसंख्या 550 है। इन तीन गांवों की महिलाओं ने सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए चलाई जा रही अनेक योजनाओं के लाभ उठाकर अपने परिश्रम से वह कर दिखाया है कि शिमला-मटौर राष्ट्रीय उच्च मार्ग से सटी यह पंचायतें आज दूसरों के लिए प्रेरणा की स्रोत बन गई है।

छामला पंचायत में महिलाओं के छह स्वयं सहायता समूह कार्य कर रहे हैं। ये हैं, गणेश, जालपा, रूची, मीनाक्षी, पार्वती और ओम शांति स्वयं सहायता समूह। ये सभी समूह आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से गठित किए गए हैं। इनमें से एक 'ओम शांति स्वयं सहायता समूह' को करीब 12 महिलाओं ने आरम्भ किया। दो साल पूर्व आरम्भ किए गए इस समूह को जुलाई 2010 में दो साल पूरे हो जाएंगे। समूह की महिलाओं ने अचार, मुरब्बा, टैडी बियर, क्रोशिये से बने उत्पाद, बैग बनाकर तथा मशरूम पैदा कर आर्थिक सम्बलता की ओर आगे बढ़ना शुरू किया। छामला महिला मण्डल की प्रधान श्रीमती निर्मला शर्मा के अनुसार समूह ने 100 रुपये के अंशदान से अपना काम शुरू किया। जिसके लिए सोच साफ थी अपनी बहनों को आत्मनिर्भर बनाना और स्वरोजगार के अवसर जुटाना। समूह में प्रत्येक महिला के नाम पर लगभग 30 हजार रुपये जमा हो गए हैं। यह समूह अब आसानी से समूह की सदस्यों को जरूरत पड़ने पर दो रुपये की आसान ब्याज दर पर ऋण भी प्रदान कर रहा है।

समूह की सदस्य प्रोमिला कौंडल ने बताया कि समूह की महिलाएं अपने उत्पादों को बेचकर 2500 रुपये से लेकर चार हजार रुपये तक की कमाई कर लेती हैं। टैडी बियर, बैग व अन्य क्रोशिये के प्रोडक्ट्स को वे मेलों, त्यौहारों इत्यादि के अवसरों पर स्टाल लगाकर बेचती हैं। वह कहती हैं, 'जितना सामान हम तैयार करते हैं, उतना आसानी से बिक भी रहा है।' समूह की एक सदस्य सीता देवी का कहना है कि एक टैडीबियर 150 से 200 रुपये तक बिक जाता है। छोटे-छोटे ये उत्पाद समूह की महिलाओं के लिए कमाई का बेहतर विकल्प बन गए हैं।

समूह ने 100 रुपये के अंशदान से अपना काम शुरू किया। जिसके लिए सोच साफ थी अपनी बहनों को आत्मनिर्भर बनाना और स्वरोजगार के अवसर जुटाना। समूह में प्रत्येक महिला के नाम पर लगभग 30 हजार रुपये जमा हो गए हैं। यह समूह अब आसानी से समूह की सदस्यों को जरूरत पड़ने पर दो रुपये की आसान ब्याज दर पर ऋण भी प्रदान कर रहा है।

समूह की सदस्य, रंजना शर्मा, कौशल्या देवी और रूपा शर्मा का कहना है कि जब से उन्होंने यह काम शुरू किया है तब से उनके तथा उनके परिवार के रहन-सहन में सुखद बदलाव आया है। अब सुबह-शाम घर का काम करने के बाद समूह द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों में वे व्यस्त हो जाती हैं, जिससे परिवार को अतिरिक्त आय भी हो जाती है। बच्चों की पढ़ाई का खर्च भी वे स्वयं वहन कर रही हैं। छोटे-छोटे खर्चों के लिए उन्हें अब किसी ओर की तरफ देखना नहीं पड़ता।

ओम शांति स्वयं सहायता समूह ने सात हजार रुपये का निवेश कर मशरूम उत्पादन का काम आरम्भ किया। अच्छी गुणवत्ता के मशरूम का 200 ग्राम का पैक तैयार कर समूह इन्हें दाड़ला भेजता है, जहां यह आसानी से हाथों-हाथ बिक जाते हैं। इतना ही नहीं वे मशरूम का अचार भी बनाती हैं। अब समूह की महिलाएं निजी तौर पर भी मशरूम का उत्पादन कर रही हैं। समूह ने दाड़ला में एक दुकान भी खोल ली है। समूह तीन-चार दिनों के अंतराल में 20 से 22 किलो मशरूम बेचता है। इसके लिए समूह ने दाड़ला में दो व्यक्तियों को रोजगार भी दिया है, जो दुकान का कार्य देखते हैं।

समूह की सफलता उन्हें और कुछ करने की प्रेरणा निरन्तर देती रहती है। समूह की सदस्य मीना, तारा, गीता और रूपा देवी कहती हैं कि उन्होंने अब पशु पालन को अपनाकर दूध बेचने का काम शुरू किया है। ये महिलाएं दूध इकट्ठा कर बिलासपुर की कामधेनु हितकारी मंच संस्था, नम्होल को देती हैं और इस तरह प्रत्येक महिला दूध बेचकर 800 से 1200 रुपये प्रति माह अतिरिक्त कमाई कर लेती है। नीना, रेखा और संतोष प्रदेश की अन्य महिलाओं को भी नसीहत देती हैं कि 'महिलाएं अब चूल्हे-चौके तक सीमित नहीं हैं। यदि सही दिशा में मेहनत की जाए तो सफलता निश्चित तौर पर मिलती है।' सरकार द्वारा महिलाओं के लिए चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने का बीड़ा उठाया है समूह की एक वरिष्ठ सदस्य चम्पा वर्मा ने।

सोलन जिले में एकीकृत बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस.) के अन्तर्गत 2390 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है। इनमें से 1347 स्वयं सहायता समूहों को विभिन्न बैंकों से सम्बद्ध किया गया है ताकि इन्हें आसान दरों पर सुगमता से ऋण उपलब्ध हो सके। अभी तक, 1347 स्वयं सहायता समूहों को इन बैंकों के माध्यम से विभिन्न कार्यों के लिए 18.32 करोड़ रुपये तक ऋण उपलब्ध करवाए जा चुके हैं। इसी प्रकार, जिला ग्रामीण विकास अभिकरण (डी.आर.डी.ए.) के माध्यम से भी जिले में लगभग 700 स्वयं सहायता समूह कार्य कर रहे हैं। 700 समूहों में से 51 को विभिन्न बैंकों से संबद्ध किया गया है, जिनके माध्यम से इन समूहों को 2.75 करोड़ रुपये तक के ऋण उपलब्ध करवाए गए हैं।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में ये स्वयं सहायता समूह कारगर सिद्ध हो रहे हैं। समूह द्वारा संचालित कार्यों के लिए सुगमता से धनराशि की उपलब्धता, प्रदेश सरकार के प्रयासों एवं सहयोग से समूहों द्वारा तैयार सामान की बिक्री के लिए उचित मंच और बाजार उपलब्ध होने से महिलाओं की आर्थिकी मजबूत हो रही है और वे आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। वह चाहे स्थानीय स्तर पर आयोजित होने वाले मेले एवं उत्सव हों या फिर प्रमुख स्थानों पर दिए जाने वाले स्टॉल, ये समूह तैयार सामान को आसानी से बेच पाते हैं, जिनके उन्हें उचित दाम भी मिल जाते हैं।

प्रदेश की इन मेहनतकश महिलाओं की सफलता की कहानी छामला तक ही सीमित नहीं है। आज प्रदेश के गांव-गांव में महिला स्वयं सहायता समूह सफलता का पर्याय बन गए हैं। प्रदेश सरकार का प्रयास और सशक्तिकरण का अनूठा मेल राज्य को आर्थिक संबल प्रदान कर रहा है। छामला तो बस एक उदाहरण है, प्रदेश के अन्य कई गांवों में ऐसी अनेक मिसालें देखी जा सकती हैं।

(सूजसवि)

गिरि गंगा के विकास के लिए 1.15 करोड़

जुब्बल कोटखाई क्षेत्र में खड़ा पत्थर के समीप करीब 8500 फीट की ऊंचाई पर स्थित ऐतिहासिक स्थल गिरिगंगा को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने पर 1.15 करोड़ की राशि खर्च की जा रही है। बागबानी मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा ने यह जानकारी 35 लाख रुपये की अनुमानित लागत से बनने वाली गिरिगंगा पर्यटक केन्द्र एवं पदयात्री कुटीर का शिलान्यास करने के बाद उपस्थित जनसभा को सम्बोधित करते हुए दी।

उन्होंने कहा कि जुब्बल-कोटखाई क्षेत्र के लिए अलग से पर्यटन सर्किट बनाया गया है और इस सर्किट के अंतर्गत 4.05 करोड़ की राशि व्यय की जा रही है। उन्होंने कहा कि इस स्थल के लिए सम्पर्क मार्ग को आगामी एक वर्ष में पक्का कर दिया जायेगा जिसके लिए 50 लाख की राशि खर्च की जायेगी। उन्होंने ऐतिहासिक मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए 10.50 लाख की राशि प्रदान की।

न्यायिक अधोसंरचना पर 106 करोड़ व्यय करेगी प्रदेश सरकार

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल हि. प्र. उच्च न्यायालय के सम्मान समारोह के दौरान सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति अल्तमास कबीर को सम्मानित करते हुए

हिमाचल प्रदेश सरकार इस वित्त वर्ष में न्यायिक अधोसंरचना सृजन एंव संबद्ध गतिविधियों पर 106.25 करोड़ रुपये व्यय करेगी। यह जानकारी मुख्यमन्त्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला के पीटरहॉफ में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के रूबी समारोह की कड़ी में आयोजित किए जा रहे 'सम्मान समारोह' को संबोधित करते हुए दी।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि न्यायपालिका का सम्मान राज्य सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल रहा है और यह प्रयास किया जा रहा है कि न्यायपालिका प्रदेश में पूर्ण रूप से स्वतंत्र एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में कार्य कर सके।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने 'शैटी आयोग' की संस्तुतियों का मान लिया है तथा न्यायिक अधिकारियों को संशोधित वेतनमान दिए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने न्यायधीश पदमनाभन समिति की संस्तुतियों को भी स्वीकार कर लिया है और अधीनस्थ न्यायिक अधिकारियों को भी संशोधित वेतनमान दिए जा रहे हैं।

उन्होंने हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा स्थापित 'ग्रीन बैंच' के प्रयासों की सराहना की तथा कहा कि इससे राज्य सरकार के पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को बल मिलेगा।

प्रो. धूमल ने कहा कि राज्य सरकार ने सदैव न्यायपालिका के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बंध स्थापित किए हैं और राज्य सरकार द्वारा यह सुनिश्चित बनाया जा रहा है कि न्यायपालिका श्रेष्ठ वातावरण में कार्य कर सके।

राज्य विधानसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती विद्या स्टोक्स ने इस अवसर पर न्यायिक सेवा के उन श्रेष्ठ अधिकारियों को बधाई दी, जिन्हें राज्य उच्च न्यायालय के रूबी समारोह की कड़ी में आयोजित किए जा रहे सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि देश के प्रथम मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति स्वर्गीय श्री मेहर चन्द महाजन हिमाचल प्रदेश के रहने वाले थे। उन्होंने प्रदेश में न्यायपालिका के बदलते हुए चेहरे की सराहना की और राज्य उच्च न्यायालय में 'ग्रीन बैंच' स्थापित करने के निर्णय का स्वागत किया।

हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री कुरियन जोसेफ ने मुख्यमंत्री तथा अन्य प्रबुद्ध न्यायिक अधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के नियमित कार्य में कुछ बदलाव लाए गए हैं, जबकि उचित मंच पर विचार-विमर्श के उपरान्त और बदलाव भी लाए जायेंगे। उन्होंने इस अवसर पर मार्च के अन्तिम रविवार को उच्च न्यायालय दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। हर वर्ष मनाये जाने वाला यह दिवस सभी न्यायिक अधिकारियों के लिए 'परिवार दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।

> **हिमाचल उच्च न्यायालय के रूबी समारोह का 'सम्मान समारोह'**

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के साथ विधिक सेवाओं में उत्कृष्ट कार्यों के लिए न्यायिक अधिकारियों को पुरस्कृत किया। रूबी समारोह की कड़ी में आयोजित किए जा रहे सम्मान समारोह के अवसर पर हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एन.एम. कासलीवाल, न्यायमूर्ति श्री सी.के. ठक्कर, उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एल.एस. पान्टा, न्यायमूर्ति श्री लीला सेठ, न्यायमूर्ति श्री टी.आर. हाण्डा, न्यायमूर्ति श्री वी.पी. भटनागर, न्यायमूर्ति श्री डी.पी. सूद, न्यायमूर्ति श्री आर. के. महाजन, न्यायमूर्ति श्री पी.के.पाली, न्यायमूर्ति श्री सुरेन्द्र स्वरूप, न्यायमूर्ति श्री आर.एल. खुराना, न्यायमूर्ति श्री ए. के. गोयल, न्यायमूर्ति श्री के.सी. सूद, न्यायमूर्ति श्री वी.के. झांजी, पूर्व महाधिवक्ता श्री एम.एस. चन्देल, पूर्व निदेशक अभियोजन अधिवक्ता श्री चन्द्र शेखर, वरिष्ठ अधिवक्ता सर्वश्री के.एस. पटियाल, एस.एस.मित्तल, जी.डी.वर्मा, एस.डी. वासुदेवा, ओम प्रकाश शर्मा, जे. आर. ठाकुर, के.डी.सूद, बी.बी. वैद, जे. एल. कश्यप, श्रीमती प्रतिमा मल्होत्रा, एच.के. भारद्वाज, एम.एस. गुलेरिया, डी.एन. शर्मा, डी. एन. रोंटा, प्रेम गोयल, ओ.पी. ठाकुर, के.एस. कंवर, इंद्र सिंह को भी सम्मानित किया गया। ये सभी लम्बे समय से प्रदेश उच्च न्यायालय से जुड़े रहे हैं।

इस अवसर पर उच्च न्यायालय के कर्मचारियों में पूर्व अतिरिक्त पंजीयक श्री बी.के. शर्मा, पूर्व विधि लिपिक श्री परमेश्वरी दास, श्री रणवीर सिंह और श्री ईश्वर सिंह को भी सम्मानित किया गया।

न्यायमूर्ति श्री आर.बी. मिश्रा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के इतिहास में यह समारोह स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा।

विधायक श्री सुरेश भारद्वाज, राज्य उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

शिमला में 'स्वास्थ्य सेवाओं का भविष्य' पर सेमिनार

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने चिकित्सा व्यावसायियों का आहवान किया है कि वे राज्य में रह कर ही दीन दुखियों की सेवा करें ताकि प्रदेश की जनता उनके अनुभव से लाभान्वित हो सके।

मुख्य मंत्री गत दिनों शिमला में मैडांटा मेडिसिटी गुड़गांव द्वारा 'भारत में स्वास्थ्य सेवाओं का भविष्य' विषय पर आयोजित एक दिवसीय वैज्ञानिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अवसर पर प्रतिभागियों को सम्बोधित कर रहे थे। इस एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 'भारत में स्वास्थ्य सेवाओं का भविष्य' विषय पर किया गया था।

मुख्य मंत्री ने कहा कि इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान चिकित्सा महाविद्यालय प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा शिक्षण संस्थान है, जहां से शिक्षा प्राप्त कर चुके चिकित्सा व्यावसायियों ने देश भर में संस्थान और राज्य का नाम ऊंचा किया है। मुख्य मंत्री ने कहा कि हालांकि राज्य सरकार ने गत अढ़ाई वर्षों में लोगों को श्रेष्ठ सुविधाएं प्रदान करने का भरसक प्रयत्न किया है और चिकित्सकों की तैनाती भी की गई है, किन्तु फिर भी इस दिशा में और प्रयास किए जा रहे हैं ताकि आने वाले वर्षों में प्रदेश के हर व्यक्ति को सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

स्वास्थ्य मंत्री डा. राजीव बिंदल ने इस अवसर पर प्रदेश में लोगों को उपलब्ध करवाई जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य अधोसंरचना को सुदृढ़ किया जा रहा है।

मण्डी जिला के नैरचौक में ईएसआई मेडिकल कालेज खोला जा रहा है, जहां वर्ष 2012 में कक्षाएं आरम्भ होने की संभावना है। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न जिलों में तीन और मेडिकल कालेज खोले जा रहे हैं।

मैडांटा मेडिसिटी गुड़गांव के अध्यक्ष डा. नरेश त्रेहन ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया। उन्होंने इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के उभरते हुए चिकित्सा व्यावसायियों को मैडांआ मेडिसिटी गुड़गांव में परामर्श एवं प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव रखा।

ओलों से हुए नुकसान की रिपोर्ट 10 दिनों के भीतर तैयार करने के निर्देश

राजस्व मंत्री ठाकुर गुलाब सिंह ने वितायुक्त राजस्व को निर्देश दिए हैं कि हाल ही में प्रदेश के कुछ भागों में हुई ओलावृष्टि एवं तूफान के कारण सेब इत्यादि फलों को हुए नुकसान की रिपोर्ट 10 दिनों के भीतर तैयार कर प्रदेश सरकार को सौंपी जाए। श्री ठाकुर ने कहा कि प्रदेश के कुछ भागों से कथित रूप से सेब तथा अन्य फलों को हुए नुकसान की जानकारी मिली है। उन्होंने कहा कि किसानों एवं बागबानों की फसलों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए राज्य सरकार आवश्यक कदम उठायेगी।

नियमित अंतराल पर आयोजित होगा फिल्मोत्सव

इंडियन पैनोरमा-2010 फिल्म फेस्टिवल के समापन अवसर पर फिल्मी हस्तियों को सम्मानित करतीं मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप

हिमाचल प्रदेश सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग तथा फिल्म महोत्सव निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित तीन दिवसीय इंडियन पैनोरमा फिल्म महोत्सव गत दिनों शिमला के प्रसिद्ध गेयटी थियेटर में सम्पन्न हो गया। समापन समारोह की अध्यक्षता मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने की। उन्होंने इस अवसर पर इस तीन दिवसीय समारोह में भाग लेने वाली फिल्मी हस्तियों को प्रमाण पत्र व हिमाचली टोपी व शॉल प्रदान कर सम्मानित किया। मुख्य सचिव ने इस अवसर पर कहा कि भविष्य में राज्य सरकार इस प्रकार के महोत्सवों को नियमित अंतराल पर आयोजित करती रहेगी ताकि राज्य में सिनेमा को बढ़ावा दिया जा सके और फिल्म प्रेमियों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। उन्होंने कहा कि यह महोत्सव फिल्मी हस्तियों के साथ संवाद स्थापित करने का एक बेहतरीन अवसर सिद्ध हुआ है।फिल्म महोत्सव निदेशालय के अतिरिक्त महानिदेशक श्री एस.एम. खान ने इस अवसर पर महोत्सव को सफल बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदान किए गए सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

> **फिल्म महोत्सव सम्पन्न**

सचिव, सूचना एवं जन सम्पर्क, हिमाचल प्रदेश श्री रामसुभग सिंह ने कहा कि राज्य सरकार इस महोत्सव को वार्षिक आधार पर करवाने के प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार फिल्मी हस्तियों को अधोसंरचना उपलब्ध करवाने पर भी विचार करेगी ताकि उन्हें आवश्यक साजो सामान मुम्बई से उठा कर न लाना पड़े। फिल्म निदेशक सर्वश्री एम.एस. सथ्यू, देबाशीष मेडेकर, अभिषेक पाठक, श्यामल करमाकर, शिवम, प्रख्यात फिल्म कलाकार सुश्री दिव्या दत्ता, श्री राहुल बोस, के.एम.ए. हुसैन और श्री विवेक मोहन ने इस अवसर पर दिखाई गई फिल्मों के बारे में लोगों के साथ संवाद स्थापित किया। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के लोगों की फिल्मों के प्रति रुचि की सराहना की।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी चुनाव

मतदाता सूचियां तैयार करने का कार्यक्रम जारी

पंचायती राज विभाग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के निर्वाचन के लिए मतदाता सूचियां तैयार करने का कार्य 1 जून, 2010 से आरम्भ हो गया है। गुरुद्वारा निर्वाचन आयुक्त भारत सरकार द्वारा इस बारे में कार्यक्रम जारी कर दिया गया है। कार्यक्रम के अनुसार प्रथम जून से 15 जुलाई 2010 के दौरान मतदाताओं का पंजीकरण, 19 जुलाई से 3 अगस्त, 2010 तक मतदाता सूचियों के दस्तावेज तैयार करने का कार्य, इनका मुद्रण और केन्द्रों पर प्रारम्भिक प्रकाशन हेतु रखा जाना, 6 अगस्त को प्रारम्भिक प्रकाशन, 6 से 31 अगस्त, 2010 तक आक्षेप और दावों का प्रस्तुतिकरण, 3 सितम्बर से 27 सितम्बर, 2010 तक दावों तथा आपतियों का पुनर्निरीक्षण अधिकारियों द्वारा निपटान तथा निर्णय को सम्बन्धित उपायुक्तों को प्रेषित करना, 30 सितम्बर से 15 अक्तूबर, 2010 तक अनुपूरक मतदाता सूची का दस्तावेज तैयार करना, 4 नवम्बर 2010 तक अनुपूरक नामावली का मुद्रण तथा 9 नवम्बर, 2010 को मतदाता सूचियों का अन्तिम प्रकाशन होगा। प्रवक्ता ने कहा कि भरा जाने वाला पंजीकरण व घोषणा प्रपत्र ग्रामीण क्षेत्रों में सम्बन्धित पटवारी तथा शहरी क्षेत्रों में सम्बन्धित स्थानीय निकायों के सचिव तथा जिलाधीश द्वारा प्राधिकृत व्यक्तियों के पास निःशुल्क उपलब्ध होंगे।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के

> **पंजीकरण कार्य 1 जून से 15 जुलाई तक**

निर्वाचन के लिए शिमला को निर्वाचन क्षेत्र माना गया है। इस निर्वाचन क्षेत्र में शिमला जिले के शिमला नगर निगम और जतोग केन्टोनमैंट बोर्ड, जिला लाहौल एवं स्पीति, कुल्लू, कांगड़ा, हमीरपुर और ऊना शामिल हैं। इसके अतिरिक्त चम्बा जिले के डलहौजी नगर परिषद्, डलहौजी एवं बकलोह केन्टोनमैंट बोर्ड भी इस निर्वाचन क्षेत्र में शामिल हैं। सोलन जिले की नालागढ़ और कण्डाघाट तहसील, राम शहर उप तहसील और कसौली, सुबाथू और डगशाई केन्टोनमैंट बोर्ड भी इस निर्वाचन क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। निदेशक, पंचायती राज, हिमाचल प्रदेश को उक्त निर्वाचन के लिए निर्वाचन आयुक्त नामित किया गया है तथा अतिरिक्त जिलाधीश कांगड़ा इसके रिटर्निंग अधिकारी होंगे। प्रवक्ता ने कहा कि केशधारी सिख जिसकी उम्र 21 वर्ष से ऊपर है वह शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के निर्वाचन के लिए मतदाता के रूप में पंजीकृत होने के लिए आवेदन कर सकता है। उन्होंने कहा कि ऐसे दल/संगठन तथा संस्थान जो भावी मतदाताओं को पंजीकृत करवाने के इच्छुक है पंजीकरण प्रपत्र 1 को अपने स्तर पर मुद्रित/टाइप करके भावी मतदाताओं में वितरित कर सकते हैं परन्तु यह प्रपत्र वैसा ही होना चाहिए जैसा नियन्त्रक एवं मुद्रण विभाग पंजाब सरकार द्वारा मुद्रित किया है। पंजीकरण का कार्य 45 दिनों के लिए 1.6.2010 से 15.7.2010 तक तक जारी रहेगा।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

विशाल हृदय वालों के लिए सारा संसार ही उनका परिवार होता है।
–स्वामी विवेकानन्द

स्वास्थ्य क्षेत्र में नई पहल

वर्तमान प्रदेश सरकार द्वारा कार्यान्वित की जा रही ग्रामीणोन्मुखी नीतियों एवं कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की गति को नया बल मिला है। आज जहां गांव-गांव सड़क मार्ग से जुड़ रहे हैं, वहीं कृषि व बागबानी की नवीनतम प्रौद्योगिकी में नई तकनीक अपनाने से एक क्रांति का सूत्रपात हो रहा है। स्वास्थ्य, शिक्षा तथा सड़क निर्माण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताएं हैं। हाल ही में लोगों को श्रेष्ठ एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने की कटिबद्धता को निभाते हुए प्रदेशवासियों को सस्ती दवाइयां उपलब्ध करवाने के लिए सरकार ने ऐतिहासिक कदम उठाया है। इस कड़ी में प्रदेश के दस जिलों व दो सरकारी मेडिकल कॉलेजों में औषधि केन्द्र खोलने के लिए हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन इस दिशा में एक सराहनीय कदम है। अब गरीबों को इन केन्द्रों में जेनेरिक दवाइयां मिलेंगी, जो कि बाजार में उपलब्ध ब्रांडेड दवाइयों की गुणवत्ता के समकक्ष होंगी। जेनेरिक दवाइयां वे दवाइयां हैं जिनमें रसायन ब्रांडेड दवाइयों के समकक्ष होते हैं। इस योजना को आरम्भ करने वाला हिमाचल देश का नौंवां राज्य बन गया है। इन केन्द्रों में भारत सरकार के दवाई उपक्रमों द्वारा निर्मित दवाइयां उपलब्ध होंगी। सरकार ने अपने अढ़ाई वर्षों के कार्यकाल में पूरे प्रदेश में राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना, ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्रों में चिकित्सकों की तैनाती, निजी क्षेत्र में पांच मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना, लिंग अनुपात को दूर करने के लिए बेटी अनमोल कार्यक्रम, 507 रोगी कल्याण समितियों के गठन के अतिरिक्त आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को सुदृढ़ कर प्रदेशवासियों विशेषकर गरीबों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की हैं। राज्य में खुलने वाले 12 औषधि केन्द्र गरीबों के लिए वरदान सिद्ध होंगे तथा किसी गरीब को बिना दवाइयों के इलाज से वंचित नहीं रहना पड़ेगा। बस, इसके लिए जरूरी है कि हमारे चिकित्सक इन केन्द्रों में उपलब्ध दवाइयां ही मरीजों को लिखें। इससे एक स्वस्थ समाज के निर्माण का सपना भी साकार होगा।

एक सराहनीय प्रयास

शिमला के ऐतिहासिक गेयटी थियेटर के कला इतिहास में एक सुनहरा पन्ना उस समय जुड़ा, जब यहां पर तीन दिवसीय फिल्म महोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। फिल्में समाज का प्रतिबिम्ब हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा ज्वलंत सामाजिक समस्याओं को उजागर करने में फिल्में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। समाज के दर्द को समझने, संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए शिमला में आयोजित फिल्मोत्सव एक सफल प्रयास रहा है। हिमाचल की सुन्दर वादियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में फिल्मों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कुल्लू, शिमला की वादियों ने देश के प्रमुख सिने कलाकरों को पिछले छह दशकों से आकर्षित किया है। समय के साथ सभी क्षेत्रों में बदलाव आया है। आज प्रदेश के हर घर में टेलीविजन, रेडियो व मोबाइल की पहुंच है। संचार माध्यमों ने लोगों को जागरूक किया है। राजधानी में आयोजित फिल्मोत्सव में विख्यात निर्देशकों की शिरकत ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रदेश कला-जगत को प्रोत्साहित कर रहा है। हिमाचली निर्देशक विवेक मोहन द्वारा मलाणा पर वृत्त चित्र इस बात का साक्षी है कि यहां के युवा भी कला क्षेत्र में अपनी दस्तक दे रहे हैं। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल द्वारा फिल्म महोत्सवों को प्रतिवर्ष आयोजित करवाना तथा फिल्मांकन के लिए फिल्म उद्योग को हर संभव सहायता प्रदान करना, सरकार की कला क्षेत्र के लिए प्राथमिकता दर्शाता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि आने वाले वर्षों में इस प्रकार के आयोजन पर्यटन क्षेत्र को भी सुदृढ़ करेंगे वहीं हिमाचल को एक नई पहचान दिलवायेंगे। वास्तव में यह फिल्म महोत्सव कला क्षेत्र में नई जान फूंक गया।

मीडिया और सत्य का आपसी रिश्ता

जन राय

प्रो. टी.डी.एस. आलोक

'सत्य जितना शुद्ध होता है उतना हमारी समझ से परे होता है।' किसी दार्शनिक के इन शब्दों में बहुत बड़ा रहस्य छिपा पड़ा है। मीडिया ने तो इस शुद्ध सत्य को नि:संदेह और भी रहस्यमय बना डाला है। मीडिया में जो सत्य दिखता है वह शीघ्र असत्य भासित होने लगता है। इस द्वन्द्व के रहते सत्य और असत्य में कोई अंतर नहीं रह गया है। इसी सत्य को कवि मन ने इस प्रकार से स्वर दिया है कि

उस समय के दर्शन में
सच, सच ही था
और झूठ, झूठ ही था
आज सच और झूठ में
कोई अंतर नहीं
उस रोज की दूरियों में
बस इतना ही
अंतर है।

उस रोज की यह प्रतीती, उस युग के सत्य के प्रति हमारा ध्यान आकृष्ट करती है जब माना जाता था कि सत्य कालजयी होता है। उस पर लाख आवरण ओढ़ लीजिए, पर सत्य को ढांप पाना कठिन है। सत्य की इस महिमा को प्राण वायु के रूप में मीडिया ने भी स्वीकार किया और मीडिया के लिए इस सत्य की अस्मिता को बचाये रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। सत्य और तथ्य मीडिया के व्याकरण के अनुसार पर्याय बन गये। माना जाने लगा कि सत्य और तथ्य का आपस में चोली दामन का साथ है। तथ्य के बिना सत्य और सत्य के बिना तथ्य अर्थहीन दिख पड़े। मानचेस्टर के यशस्वी सम्पादक सी.पी. स्कॉट ने तभी स्वीकार किया कि 'कुछ कह देना सबसे आसान काम होता है किन्तु हम यह न भूलें कि तथ्य, सदैव पवित्र होता है।' इसी पवित्रता ने पत्रकारिता को शायद एक विशिष्ट पहचान दी और इसी का परिणाम था कि हमारे देश के महान कर्णधारों ने राजनीति के सोपान को दूसरे स्थान पर रखा जबकि देश को पराधीनता की जंजीरों से मुक्त करने के लिए इन कर्णधारों ने पत्रकारिता को अपने लक्ष्य प्राप्ति का प्रथम सोपान माना था।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जन जागरण के लिए, जनमत बनाने के लिए सत्य पथ की अनुगामिनी पत्रकारिता को एक कारगर हथियार की तरह स्वीकार किया था और प्रखर भाव एवं विचार, जिनका सत्य से अटूट नाता है के सम्बल से, गांधी जी ने पत्रकारिता की दिशा को निर्धारित किया था। पत्रकारिता के क्षेत्र में, सत्य रहित आचरण गांधी जी ने न कभी स्वीकार किया और न ही उसे पत्रकारिता के लिए शुभ माना। जहां उन्हें लगा कि जिस सत्य के प्रतिपादन में, मन, वचन और कर्म का योग नहीं है वह सत्य की गरिमा से ओतप्रोत हो ही नहीं सकता। सत्य शरीर की गरिमा के रोम-रोम में, भी समाहित रहता है। अत: जिसे शब्दों में व्यक्त न करके, भाव-भंगिमा द्वारा भी गलत ढंग से प्रस्तुत किया जाये वह सत्य हो नहीं सकता। इसीलिए शायद सत्य को बहुत बड़ा तप भी माना गया है। आर्ष कवि कबीर ने अपनी काव्य शैली में सत्य को इस प्रकार परिभाषित किया:

सांच बराबर तप नहीं
झूठ बराबर पाप
जाके हृदय सांच है
ताके हृदय आप।

सच पर पर्दा न पड़ा रहे, इसके दृष्टिगत भगवान वेद व्यास ने महाभारत की रिर्पोताज में संलग्न संजय को अद्‌भुत वरदान दिया था कि जो कुछ घटेगा उसे संजय हू-ब-हू वर्णित कर सकेगा। फिर चाहे घटना आगे घटती, पीछे घटती, ऊपर घटती या नीचे। चतुर्दिक घटना का वर्णन करने की सामर्थ्य का वरदान तो संजय को मिला ही था, इसके अतिरिक्त संजय मन में छिपे गुह्य भाव को भी स्वर देने का वरदान पाने में सक्षम हुए।

संस्कृत में नारद ने वर्तमान, अतीत तथा भविष्य के गर्भ में छिपे सत्य को उजागर किया। मीडिया कहें या पत्रकारिता, उसका समय के मंच पर जैसा भी स्वरूप रहा, वह तब भी और आज भी, सत्य के प्रति ही प्रतिबद्ध था। इसमें संशय के लिए कोई स्थान शेष न ही रहेगा। सत्य का रक्षण हर कीमत पर हो, यही सबसे बड़ा धर्म भी था और मीडिया को आज भी इससे विलग करने की कल्पना भर करना एक महापाप है।

धर्मराज युधिष्ठिर ने इस महापाप का फल नरकगामी होकर चखा था। ऐसा ऋषिकृत इतिहास हमें बताता है। अश्वथामा हाथी का नाम भी था और गुरु पुत्र का नाम भी था, मारा गया हाथी था, पर तोड़ मरोड़ कर यह कहना कि 'मारा गया अश्वथामा पर वह व्यक्ति था या हाथी...? इस तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किये तथ्य में भी अंतत: सत्य की ही हत्या का प्रयत्न छिपा हुआ था। आज तो तथ्य को तोड़ मरोड़ कर पेश करने की कसरत में निमग्न, मीडिया को इस कुपथ से हटाना ही होगा अन्यथा सत्य जो मीडिया का प्राण तत्व है, उसकी रक्षा करना, एक दुष्कर कार्य बन कर रह जायेगा। मीडिया को सत्य की अर्थवता भी ज्ञात है, पर मीडिया ने उसको अंगीकार करना छोड़ दिया है। सत्य की व्याख्या करना, सत्य के अर्थ स्पष्ट करने भर से ही सत्य का मूल भाव, मूल अर्थ और उसकी उपयोगिता प्रकट नहीं होती।

> **मीडिया को यह ध्यान भी रखना है कि शहर, शहर है, गांव, गांव है। इस देश में शहर का सत्य गांव का, और गांव का सत्य शहर का नहीं हो सकता। मीडिया को गांव को गांव की तरह और शहर को शहर की तरह चित्रित करने का प्रयत्न करना चाहिए।**

सत्य का रास्ता चुनौती का रास्ता भी है। सत्य का स्वागत कम उसके प्रति द्वेष की भावना समाज में अधिक होती है इसीलिए पत्रकार, सत्य को हू-ब-हू वर्णित करने से कतराते हैं। यदि सत्य को ठीक से प्रकट करने में पत्रकार थोड़ा साहस जुटा पाने में सक्षम होता भी है तो उन्हें जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सत्य सदैव चुनौतियों की कसौटी पर रहा है। आर्ष कवि तुलसीदास ने भी सत्य से ओतप्रोत रामचरित मानस जब लिखा तो उन्हें भी कठिन परीक्षा के दौर से गुजरना पड़ा। बनारस के पंडित क्षुब्ध थे, इसीलिए उन्होंने पोथी को गंगा में फेंक दिया। और उसका महत्व तब स्वीकारा गया जब गंगा ने सही समीक्षा की। और रामायण न तो डूबी न गीली हुई। सत्य के मूल्य के लिए भी समाज की ईर्ष्या और द्वेष को झेलना पड़ता है। सत्य से जो ज्ञान मिलता है, सत्य से जो रहस्य सूत्र उघाड़े जा सकते हैं, वे भी ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा के विधायक बन जाते हैं। हम दूसरों को धनी तो देख सकते नहीं, हम ज्ञानी भी नहीं देख सकते। इसीलिए समाज में यह धारणा गहरे षडयन्त्र के तहत प्रचलित की गई कि सरस्वती और लक्ष्मी का तो आपस में घोर बैर रहा है।

दूरदर्शिता, साहसिकता और नीति निष्ठा का समन्वय प्रतिभा के रूप में परिलक्षित होता है। ओजस् तेजस् और वर्चस उसी के नाम है। जीवन के साथ जुड़े हुए महत्वपूर्ण प्रसंगों से निपटने का जब कभी अवसर आता है तो प्रतिभा ही प्रधान सहयोगी की भूमिका निभाती देखी जाती है। मीडिया कर्मी को चाहिए की सत्य के परम मूल्य को जीवन की अंतिम सांसों तक जीने के लिए अपनी प्रतिभा रूपी सम्पदा में बढ़ोतरी करते रहें प्रतिभा द्वारा ही सत्य को पोषण मिलता है और प्रतिभा गुण के द्वारा ही सत्य पर से पर्दे हटाये जा सकते हैं। सत्य की रक्षा का सबसे बड़ा अमोघ अस्त्र होता है निभर्यता। निभर्यता के द्वारा मीडिया सत्य पथ पर सच्चा राही बना रह सकता है। पर निर्भयता का गुण धार्मिक चेतना के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह साहस जब मीडिया कर्मी जुटा लेंगे तो सत्य का रक्षण सहज होगा और जब सत्य का यह रक्षण कार्य सहज होगा तो सत्य के द्वारा कल्याण और सौंदर्य चेतना के मूल्यों की स्थापना भी स्वत: हो पायेगी।

व्यावहारिक स्तर पर गांधी ने पत्रकारिता के लिए सत्य की रक्षा करना तलवार की धार पर चलना माना है, पर आज के परिप्रेक्ष्य में पत्रकरारिता का अस्तित्व बनाये रखना, फिर सत्ता व्यवस्था के साथ बेहतर सम्बन्ध बनाना भीएक बहुत बड़ी चुनौती है।

मीडिया को यह ध्यान भी रखना है कि शहर, शहर है, गांव, गांव है। इस देश में शहर का सत्य गांव का, और गांव का सत्य शहर का नहीं हो सकता। मीडिया को गांव को गांव की तरह और शहर को शहर की तरह चित्रित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

जन संसद जन संसद जन संसद

सराहनीय कदम

वर्तमान सरकार ने दूध-गंगा परियोजना लागू की है जिसमें स्वयं सहायता समूहों को शामिल किया है ताकि दूध के उत्पादन में बढ़ौतरी कर ग्रामीणों की आर्थिक में सुधार लाया जा सके। प्रदेश सरकार इसके लिए बधाई की पात्र है। हिम मिल्कफेड भी कुछ सराहनीय कार्य कर रहा है। हाल ही में मण्डी के कोट मोरसन बैहना में स्वचालित दूध परख केन्द्र खोला गया है। ऐसे ही केन्द्र प्रदेश में चरणबद्ध ढंग से खोले जा रहे हैं। सरकार द्वारा आरम्भ किये गये प्रयासों से आने वाले वर्षों में हिमाचल में दूध की गंगा बहेगी यदि लोग इस योजना का लाभ उठायेंगे।

घनश्याम गुप्ता

एक स्वागत योग्य कार्य

सरकार द्वारा हि.प्र. सचिवालय की कार्य प्रणाली में सुधार लाने के लिए स्थापित बायोमेट्रिक प्रणाली एक स्वागत योग्य कदम है। इसके लिए मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल बधाई के पात्र है तो जनता को सुचारू एवं दक्ष प्रशासन प्रदान करने के प्रति कृतसंकल्प है।

मेरा सरकार से आग्रह है कि यह प्रणाली शिमला में अन्य कार्यालयों जैसे कुमार, हाऊस, शिक्षा निदेशालय, स्वास्थ्य निदेशालय, वन विभाग तथा विशेष तौर पर प्रदेश विश्वविद्यालय में भी स्थापित की जाये।

कोटखाई **ब्रजेश चौहान**

कृषक मित्र

सेब का कोर रॉट रोग
पहचान व प्रबन्धन

देश में सेब की खेती मुख्यत: पहाड़ी प्रदेशों जैसे जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम में की जाती है। सेब की पैदावार 6-9 टन प्रति हैक्टेयर जबकि विश्व के सेब उत्पादक देशों जैसे न्यूजीलैंड, चीन, जापान, अमेरिका, यूरोपियन देशों व आस्ट्रेलिया में यह 30-40 टन प्रति हैक्टेयर है। इस कम पैदावार के विभिन्न कारणों में से रोगों के संक्रमण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पिछले कुछ वर्षों में जहां बागबानों ने वैज्ञानिक रोग

● डॉ. इन्द्रमोहन शर्मा

निवारण ढंग अपना कर स्कैब, असामयिक पत्ता झड़न, कैंकर, कॉलर रॉट व जड़ विगलन जैसे महत्त्वपूर्ण रोगों से निजात पाई है। वहीं पर कुछ नई रोग समस्याएं, जिनमें कोर रॉट मुख्य है, उभर कर सामने आई है। इसके फलस्वरूप मध्य जून से लेकर फल तुड़ान तक भारी फल गिरान (5-25 प्रतिशत) होने के कारण काफी हानि का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त संक्रमित फल 2-7 प्रतिशत तक भण्डारण में भी सड़ते हैं।

लक्षण

कोर रॉट के लक्षण फलों के ऊपर प्राय: जून माह से फल तुड़ान के पूर्व तक दिखाई देते हैं। परन्तु जुलाई माह में इसका भारी प्रकोप होता है। इस रोग के मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं:

1. रोग ग्रस्त फलों की बढ़ोतरी का रूकना, आकार में छोटे व विकृत होना।

2. रोगी फलों में स्वस्थ फलों की अपेक्षा जल्दी व अधिक रंग आना और ऐसे फलों का असामयिक गिरना।

3. रोग ग्रस्त फलों को काट कर देखने पर कोर (बीज के इर्द- गिर्द) भाग में काली, गुलाबी या भूरी सड़न का दिखाई देना।

4. बाजार में रोग ग्रस्त फल बाहर से ठीक दिखाई देते हैं, परन्तु बीज से गूदे की ओर सड़ रहे होते हैं, व कई बार ऐसे फलों के गूदे में कड़वाहट होती है।

5. रोग ग्रस्त फल कई बार भण्डारण में भी सड़ जाते हैं।

रोगजनक: यह रोग मुख्यत: अल्टरनेरिया माली (काली कोर रॉट) व ट्राइकोथीसियम रोसियम (गुलाबी कोर रॉट) नामक फफूँद से उत्पन्न होता है। इनके इलावा स्टैमफाइलम, कलैडोस्पोरियम, फ्यूजेरियम, म्यूकर, बोट्राइटिस साइनेरिया, पैनीसीलियम व बोट्रायोस्फैरिया नामक फफूंदों का संक्रमण भी इस रोग का कारण बनते हैं।

रोगचक्र

रोगजनक फफूंद प्राय: सेब के पत्तों व टहनियों पर जीवित रहते हैं। रोगजनक प्राय: मार्च-अप्रैल माह में सेब में फूल से पंखुड़ीपात की अवस्था में, फूल के विभिन्न भागों पर पनपकर संक्रमण करते हैं, व अंदर रह जाते हैं। कई बार रोगजनक फफूंद मटर की अवस्था (जब पुष्कोश अंत भाग ऊपर की ओर होता है) से फल विकास अवस्था तक पुष्कोश अंत से फल के अंदर बीज तक पहुँचता है या साइनस (पुष्कोश अन्त से बीज तक का भाग) में भी जीवित रहता है। यह रोग फलों में रंग आने के समय (जब फलों में मिठास बननी शुरू होती है) सेब के बीज के इर्दगिर्द फैल कर सड़न पैदा करते हैं। परिणामस्वरूप बीज का फल से सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। बीज मुख्यत: फल में ऑक्सिन हारमोन पैदा कर फल के आकार में बढ़ोतरी लाता है व इसे गिरने से रोकता है। बीज का फल से अलग होने का कारण इसमें जल्दी रंग लाने वाले हारमोन (इथिलीन) व इसे गिरने में मदद करने वाले रसायनिक (एबसैसिक एसिड) का अनुपात बढ़ना है। इस कारण रोगग्रसित फलों में स्वस्थ फलों की अपेक्षा जल्दी रंग आता है व प्रभावित फलों की बढ़ोतरी रूक जाती है और उनका असामयिक गिरान हो जाता है।

रोग ग्रस्त फल

रोग ग्रस्त फल का अंदरूनी भाग

कोर रॉट के लक्षण फलों के ऊपर प्राय: जून माह से फल तुड़ान के पूर्व तक दिखाई देते हैं। परन्तु जुलाई माह में इसका भारी प्रकोप होता है। रोग ग्रस्त फलों की बढ़ोतरी का रूकना, आकार में छोटे व विकृत होना। रोगी फलों में स्वस्थ फलों की अपेक्षा जल्दी व अधिक रंग आना और ऐसे फलों का असामयिक गिरना आदि इसके मुख्य लक्षण हैं।

अनुकूल वातावरण व परिस्थितियां

- ❖ फूल खिलने से फल बनने की अवस्था में सामान्य नमी व औसतन तापमान 14-18 डिग्री सेल्सियस होने पर रोगजनक फफूंद अधिक पनपकर सफलतापूर्वक संक्रमण करते हैं।
- ❖ फल विकास अवस्था में गर्म व शुष्क मौसम रोग के फैलने में सहायक सिद्ध होता है। ऐसी परिस्थितियां प्राय: कम ऊँचाई (4000 फीट) वाले बागीचों में पाई जाती है।
- ❖ मई-जून में शुष्क मौसम के बाद जुलाई में तुरन्त अधिक वर्षा होने से भी यह रोग अधिक फैलता है।
- ❖ जिन सेबों की किस्मों में साइनस (पुष्कोश अन्त से बीज तक का भाग) की लम्बाई कम होती है या जो किस्में लम्बाई में कम व चौड़ाई में अधिक होती है उनमें यह रोग अधिक पनपता है।

प्रबन्धन

- ➢ बागीचों में रोगी फलों, सूखी टहनियों व पत्तों को इक्ट्ठा कर नष्ट करें। ऐसा करने से रोगजनक फफूंदों की संख्या में कमी आती है।
- ➢ फल विकास की अवस्था में उचित सिंचाई का प्रबन्ध करने से यह रोग कम फैलता है।
- ➢ गुलाबी कली की अवस्था पर कारबैंडाज़िम 100 ग्राम + मैंकोजैब 500 ग्राम या कोम्बीप्रोडक्ट 500 ग्राम या डाइफैनाकोनाजोल 30 मि.ली. या मैंकोजैब 600 ग्राम का प्रति 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ➢ पंखुड़ीपात पर हैक्साकोनाज़ोल 100 मि.ली. प्रति 200 लीटर पानी में डालकर छिड़काव करें।
- ➢ मटर-अखरोट की अवस्था पर कवटल 300 ग्राम या डोडीन 150 या मैंकोजैब 600 ग्राम या प्रोपिनेब 600 ग्राम या शील्ड 600 या कोम्बीप्रोडक्ट 500 ग्राम नामक फफूँदनाशकों का प्रति 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ➢ फल तुड़ान के बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 600 ग्राम प्रति 200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें जो कैंकर रोग के निवारण हेतु आवश्यक है। यह इस रोग के रोगजनकों (जो टहनियों या पत्तियों पर पनपते हैं) का भी नियंत्रण करता है।
- ➢ अनुमोदित खादों का संतुलित प्रयोग करने से इस रोग का संक्रमण कम होता है।

सेब का कोर रॉट रोग पर होने वाला छिड़काव स्कैब, असामयिक पत्ता झड़न, पाउडरी मिल्डयू व पत्ता धब्बा रोगों के लिए भी उपयोगी है।

कल्याण योजनाओं के लाभ पहुंचे गरीबों तक

वर्तमान सरकार गरीबों के कल्याण के प्रति कृतसंकल्प है। सरकार द्वारा गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों के तीव्र सामाजिक-आर्थिक उत्थान को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की गई है। प्रदेश के दूरदराज क्षेत्रों में रहने वाले गरीब परिवारों ने सरकार द्वारा आरम्भ की गई कल्याण योजनाओं का लाभ उठाया, जिससे उनके जीवन स्तर में बढ़ोतरी हुई है। शिमला जिले के विकास खण्ड रामपुर में पिछले वित्त वर्ष के दौरान अटल आवास योजना के तहत 53 व्यक्तियों को 38,500 प्रति व्यक्ति की दर से अनुदान प्रदान किया गया। इस योजना पर 20.40 लाख रुपये व्यय किये गये।

इसी तरह इंदिरा आवास योजना के तहत 83 परिवारों को 31.96 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई। राष्ट्रीय परिवार योजना के तहत मृत्यु होने की स्थिति में प्रति प्रभावित 58 परिवारों को 5.80 लाख रुपये अनुग्रह राशि में रूप में प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त मातृ शक्ति बीमा योजना के तहत दो लाख रुपये की राशि वितरित की गई। स्वयं सहायता योजना के सामूहिक तौर पर आर्थिक उत्थान के नये आयाम स्थापित किये हैं। स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत 22 स्वयं सहायता समूहों व स्वर्ण जयन्ती व्यक्तिगत योजना के तहत 28 परिवारों को 59.62 लाख रुपये प्रदान किये गये।

विकास खण्ड रामपुर में निर्मल स्वच्छता अभियान के तहत 31 पंचायतें शौच मुक्त हो चुकी हैं। दत्तनगर पंचायत को निर्मल ग्राम पुरस्कार व सराहन पंचायत को महाऋषि वाल्मीकि सम्पूर्ण स्वच्छता पुरस्कार प्रदान किया गया।

–इन्द्र सिंह चंदेल

मृदा परीक्षण करवायें बेहतर पैदावार पायें

जिला बिलासपुर में कृषि एवं बागबानी को सुदृढ़ करने तथा इसे बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा सतत प्रयास किये गये हैं। जिले में अधिकतर लोगों का व्यवसाय कृषि है तथा जिले की आर्थिकी में कृषि क्षेत्र एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

किसानों तथा बागबानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए अनेक योजनाएं कार्यान्वित की जा रह हैं। इसमें एक है मृदा जांच योजना जिसने किसानों को मिट्टी की गुणवत्ता के अनुरूप खेती करने के लिए प्रेरित किया है। इस योजना के तहत पौधों के भरपूर विकास के लिए 16 तत्वों की आवश्यकता है जिसमें कार्बन, हाईड्रोजन व आक्सीजन तथा तीन तत्व पौधे, वायु तथा जल से लेते हैं, शेष 13 मृदा से प्राप्त होते हैं। मृदा में किसी भी तत्व की कमी पौधों की बढ़ौतरी एवं विकास पर बुरा असर डालती है। मृदा के परीक्षण से प्रयोगशाला में जांच करके मिट्टी में मौजूद भिन्न-भिन्न मुख्य सूक्ष्म गौण तत्वों के बारे में पता लगाया जाता है। प्रयोगों द्वारा मृदा में मौजूद विभिन्न प्रकार के तत्वों की मौजूदगी एवं उनकी कमी का पता लगाया जाता है जिसके लिए रसायनिक खादों व गोबर की खाद की मात्रा डालने बारे जानकारी मृदा स्वास्थ्य कार्ड में दी जाती है। उसी के अनुसार विभिन्न खादों का संतुलित प्रयोग करने से मृदा की संरचना बनी रहती है और फसलों की अधिक पैदावार होती है।

बिलासपुर जिले में गत वर्ष 10500 मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाये जबकि वर्ष 2008-09 में 8,800 लक्ष्य के मुकाबले 8,812 किसानों व बागबानों को मृदा के नमूनों की जांच करने के बाद मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान किये जा चुके हैं।

जिला बिलासपुर में मृदा परीक्षण के लिए धौलरा में 1961 से एक प्रयोगशाला कार्य कर रही है। पहले इस प्रयोगशाला में मृदा के मुख्य तत्व व मृदा पीएच का ही परीक्षण किया जाता था परन्तु वर्ष 2007 में इस प्रयोगशाला में अत्याधुनिक डबल एएच (एएएस) मशीन स्थापित की गई है। इस मशीन द्वारा मिट्टी के सूक्ष्म व गौण तत्वों जैसे तांबा, लोहा, मैंगनीज, जिंक, बोरोन, जस्ता व सल्फर से सम्बन्धित परीक्षण किया जाता है। जिला बिलासपुर में इस वित्त वर्ष के दौरान 10,500 कृषि भूमि स्वास्थ्य कार्ड बनाने का लक्ष्य रखा गया है जिसमें से अभी तक 1200 मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाये जा चुके हैं। गत वर्ष 10500 मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाये जबकि वर्ष 2008-09 में 8,800 लक्ष्य के मुकाबले 8,812 किसानों व बागबानों को मृदा के नमूनों की जांच करने के बाद मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान किये जा चुके हैं। इस प्रकार जिला बिलासपुर में अब तक कुल कृषि भूमि स्वास्थ्य कार्डधारकों की संख्या 20,512 हो चुकी है।

–गंगा राम

भेड़पालक बीमा योजना

केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड और भारतीय जीवन बीमा निगम के सहयोग से हिमाचल में भेड़ पालक बीमा योजना वर्ष 2007-08 से कार्यान्वित की जा रही है। भेड़पालकों के महत्व को समझते हुए इस योजना को प्रारम्भ किया गया है। 330 रुपये के प्रीमियम वाली इस बीमा योजना में भेड़पालक मात्र 80 रुपये प्रतिवर्ष देकर इस योजना का लाभ उठा सकता है बाकि के प्रीमियम का खर्चा केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड और भारतीय जीवन बीमा निगम मिलकर वहन करते हैं।

कोई भी भेड़पालक चाहे स्त्री हो या पुरुष जिसकी उम्र कम से कम 18 वर्ष और अधिक से अधिक 59 वर्ष हो वह इस योजना का सदस्य बनकर लाभान्वित हो सकता है। इसमें 80 रुपये की राशि लेकर भेड़पालक का एक वर्ष के लिए बीमा कर दिया जाता है। एक वर्ष के उपरांत उसे पॉलिसी का नवीनीकरण करवाने के लिए 80 रुपये पुन: देने होते हैं।

बीमाकृत भेड़पालक की प्राकृतिक मृत्यु होने की स्थिति में उसके परिवार को 60 हजार रुपये की अदायगी की जाती है। कहीं अगर बीमा करवाये हुए भेड़पालक की मृत्यु दुर्घटना में होती है तो वह राशि डेढ़ लाख रुपये मिलती है। इसे एक्सीडैंटल डैथ/डिसएबिलिटी बैनीफिट कहा जाता है। अगर दुर्घटना में मौत न होकर पूर्ण विकलांगता हो जाये तब भी डेढ़ लाख रुपये की राशि दी जाती है। अगर दोनों आंखों या दो अंगों या फिर एक आंख और साथ में एक अंग से विकलांग हो जाये तो भी यह राशि डेढ़ लाख रुपये ही रहती है। अगर भेड़पालक एक आंख या सिर्फ एक अंग से विकलांग हो जाये तो उसे 75000 रुपये की राशि दी जाती है। पहले शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति के लिए बीमा की राशि केवल मृत्यु या नई विकलांगता के लिए ही दी जाती थी।

इसके अलावा इस योजना में शामिल होने पर भेड़पालक को एक मुफ्त लाभ जिसे ऐड-ऑन-बेनीफिट कहा जाता है, मिलता है। इसमें भेड़ पालक के दो बच्चों को नौंवीं कक्षा से बारहवीं कक्षा तक पढ़ने के लिए 100 रुपये प्रतिमाह बच्चा वजीफा मिलता हैं यह साल में दो बार 6-6 महीने के अंतर पर दिया जाता है।

इस योजना से लाभान्वित होने के लिए भेड़पालक को अपने नजदीक के पशु चिकित्सालय से सम्पर्क करना चाहिए ताकि वह भेड़पालक को इस योजना में शामिल होने के लिए विस्तार से नियमों एवं शर्तों की जानकारी दे सकें।

सौजन्य-पशु पालन विभाग, हि.प्र.

प्राचीन भारतीय लिपियां

✍ देवराज शर्मा

विश्व में जितनी भाषाएं प्रयोग में हैं, लगभग उतनी ही लिपियां प्रचलन में हैं। भाषा का जन्म लिपि से पहले हुआ गया माना जाता है। क्योंकि लिपि भाषा की ही किसी ध्वनि का चिन्ह होती है। चिन्ह यानी अक्षर या अल्फावेट कहलाते हैं। लिपि और लिपिकार शब्द का प्रयोग पणिनी की अष्टाध्यायी में हुआ है।

ऐसा माना जाता है कि पणिनी के समय में लिपि का प्रयोग अनुष्ठानिक आचरण के परिवेश में हुआ होगा। यही कारण है कि सभी लिपियां दैवी उत्पत्ति वाली मानी गई हैं।

कहने का तात्पर्य है कि लिपि वह संकेत अथवा वर्ण (शब्द) है जिसके माध्यम से लेखन कला संभव हुई है। भारत में प्रचलित देवनागरी लिपि के अलावा कई अन्य लिपियां भी प्रचलन में रही हैं जिनका उल्लेख इस लेख में किया गया है।

सिन्धु लिपि : भारत की अति प्राचीन लिपि न पढ़े जाने के कारण विद्वानों के लिए रहस्य बनी हुई है। सिन्धु लिपि से सम्बन्धित अभी तक कोई ऐसा लेख प्राप्त नहीं हुआ है, जिसमें बीस से अधिक संकेत हों, ऐलखड़ी, मिट्टी तथा हाथी दांत से निर्मित मुहरों पर इन लिपि संकेतों के हाथ उत्कीर्ण पशु-पक्षियों की आकृतियों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सिन्धु लिपि दायीं ओर से बायीं ओर को लिखी जाती थी और दूसरी पंक्ति बायीं से दायीं ओर लिखी जाती थी। कुछ विद्वानों ने सिन्धु लिपि को चित्र लिपि माना है। इस लिपि में लगभग 500 संकेतों का प्रयोग होता था। यह लिपि सुमेर, मिस्र, क्रीट और चीन की लिपियों से मिलती-जुलती है। यह लिपि लगभग 4000 वर्ष पुरानी है।

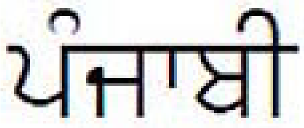

ब्राह्मी लिपि : प्राचीन भारतीय लिपियों में ब्राह्मी लिपि का स्थान सर्वश्रेष्ठ रहा है। ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि यह विदेशी लिपि है तथा कुछ विद्वान इसका उद्भव भारत में ही हुआ मानते हैं। अशोक ने इस लिपि को धम्म लिपि का नाम दिया। इस लिपि को आज ब्राह्मी लिपि के नाम से जाना जाता है। भारतीय परम्परा के अनुसार ब्रह्मा को इस लिपि का जन्मदाता माना जाता है। इस लिपि को दायीं से बायीं ओर को लिखा जाता है तथा कुछ अक्षरों को बायीं से दायीं ओर लिखा जाता है। अक्षरों की बनावट आदि से यही प्रतीत होता है कि सिन्ध लिपि से ही ब्राह्मी लिपि का विकास हुआ। इस लिपि के उपलब्ध लेखों में लगभग 1000 वर्ष का अन्तर है। इस लिपि में मूलाक्षरों के साथ स्वरों की मात्राओं का रूप देखने को मिलता है। साथ ही संयुक्त अक्षर भी देखने को मिलते हैं।

खरोष्ठी लिपि : बौद्ध ग्रंथ 'ललित विस्तर' में जिन 64 लिपियों का उल्लेख मिलता है, उनमें पहले नम्बर पर ब्राह्मी तथा दूसरे नम्बर पर खरोष्ठी लिपि का उल्लेख है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में आरमेई लिपि के आधार पर एक नवीन खरोष्ठी लिपि का निर्माण हुआ। इस लिपि को लेखों की भाषा प्राकृत है। वर्ण माला भी सरल है तथा दायीं ओर से बायीं ओर लिखी जाती है। सामान्यत: ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से ईसा की चौथी शताब्दी तक खरोष्ठी लिपि का व्यवहार होता रहा है। भारत में खरोष्ठी लिपि के अभिलेख कुषाण शासकों के हैं।

कुटिल लिपि : छठी से नौवीं शताब्दी तक बहुधा सारे उत्तरी भारत वर्ष की लिपि गुप्त लिपि का परिवर्तित रूप है। इस लिपि के अक्षरों के सिर बहुधा ठोस त्रिकोण चिन्ह होते हैं। परन्तु कभी-कभी छोटी-सी आड़ी लकीर से भी बनाए जाते हैं। अ, आ, ध, प, त्र, य, ष और स का ऊपर का अंश दो भागों में होता है और बहुधा प्रत्येक विभाग पर सिर का चिन्ह जोड़ा जाता है। इस लिपि की विशेषता यह है कि इसके अंत में पूरी वर्णमाला दी गई है। इस लिपि के बहुत से अक्षर नागरी लिपि के अक्षरों से मिलने लगे हैं। इस लिपि का नाम न्यून कोणीय लिपि भी है क्योंकि इस लिपि के अक्षरों की खड़ी रेखाओं के नीचे न्यून कोण बनते हैं। इस लिपि की सिद्ध मातृका लिपि भी कहा जाता है।

नागरी लिपि : गुप्त और कुटिल लिपियों से 8वीं शताब्दी में नागरी या देवनागरी लिपि का विकास हुआ। इस लिपि की प्रमुख विशेषता है कि इसके अक्षरों के सिरों पर रेखाएं उतनी लम्बी हैं जितनी कि इनके अक्षरों की चौड़ाई यह माना जाता है। कि गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा सबसे पहले इस लिपि का प्रयोग किया गया। इसी कारण इसका नाम नागरी पड़ा।

शारदा लिपि : शारदा कश्मीर की अराध्य देवी है क्योंकि कश्मीर में ही इस लिपि का विकास हुआ इसलिए इस लिपि को शारदा लिपि का नाम दिया गया है। कुछ विद्वानों का मत है कि इस लिपि का जन्म सिद्धमात्रिका लिपि से हुआ है। ईसा की दसवीं शताब्दी में कश्मीर के साथ ही उत्तरी-पूर्वी पंजाब में इस लिपि का व्यवहार देखने को मिलता है। इसके प्राचीनतम लेख 8वीं शताब्दी से मिलते हैं। कीरग्राम के बैजनाथ मंदिर में लगी प्रशस्तियों का समय 804 ई. का माना जाता है। परन्तु कीनहार्न ने इन प्रशस्तियों को 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का माना है। डॉ. फोगल के अनुसार चम्बा में शारदा लिपि के बहुत से अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

गुरमुखी लिपि : यह सिक्खों की लिपि है। लगभग सम्पूर्ण पंजाब में इस लिपि का प्रभाव देखने को मिलता है। इसमें पंजाबी भाषा की अनेक पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित की गई हैं। जो वर्तमान में उपलब्ध हैं।

कलिंग लिपि : कलिंग प्रदेश में 9वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य जिस लिपि का प्रयोग हुआ, विद्वानों ने उस लिपि को कलिंग लिपि या नाम दिया। इस लिपि में 3 शैलियां देखने को मिलती है, आरम्भिक लेखों में मध्य देशीय तथा दक्षिण का प्रभाव देखने को मिलता है। अक्षरों के सिरे वर्णाकार है। आरम्भिक अक्षर समकोणीय दिखाई देते हैं। किन्तु बाद में, कन्नड़, तेलुगू लिपि के प्रभाव के अंतर्गत अक्षर गोलाकार होते दिखाई देते हैं।

गुजराती लिपि : इस लिपि का जन्म नागरी लिपि से हुआ है। गुजरात प्रांत में व्यवहार में लाई जाने वाली इस लिपि के सिरों पर रेखाएं होती थीं, परन्तु बाद में इस लिपि के सिरों पर रेखाएं नहीं दिखती हैं। (शेष पृष्ठ 11 पर)

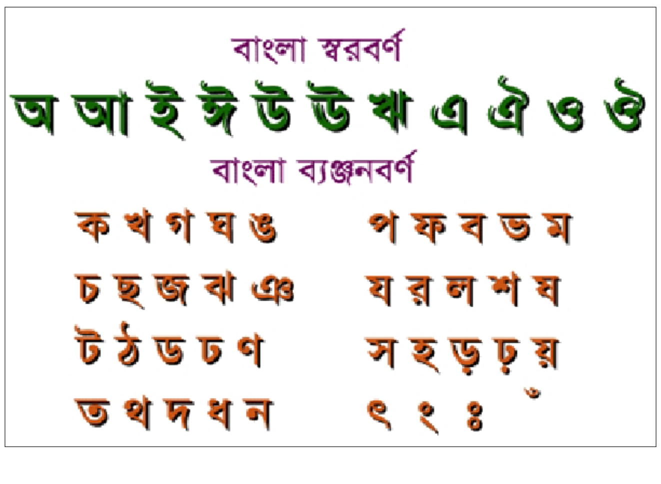

दो धर्मों की आस्था स्थली त्रिलोकीनाथ मंदिर

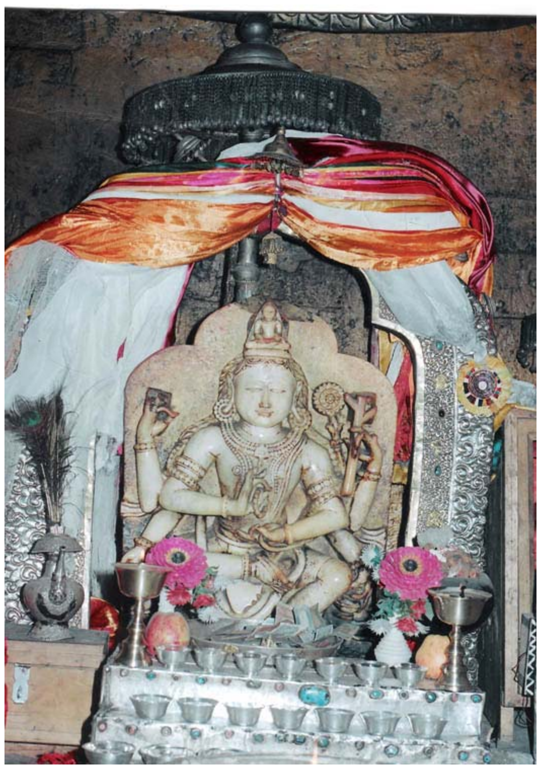

✍ डॉ. कमल के. 'प्यासा'

भगवान शिव के सम्बन्ध में कहा जाता है कि ये नित्य तथा अजन्मा हैं, अर्थात् इनका आदि और अंत कुछ भी नहीं। ये तो अनादि और अनन्त है। इस तरह भगवान शिव सर्वोपरि परात्पर तत्व हैं, अर्थात् **'यस्मात् परं नापरमस्ति किचिंत'।**

तभी तो भगवान शिव को अनेक नामों से जाना जाता हैं। इनके अनेकों रूपों में उमा महेश्वर, अर्धनारीश्वर, हरिहर, मृत्युजंय, पंचवक्त्र, एकवक्त्र, पशुपति, कृत्तिवास, दक्षिणामूर्ति, नीलकंठ, योगीश्वर व नटराज आदि कई रूप अति प्रसिद्ध हैं। हिमाचल प्रदेश में भगवान शिव से संबंधित मंदिरों को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि यहां किसी समय शैवधर्म का बोलबाला रहा है। प्रदेश के जिला चम्बा, मण्डी तथा कांगड़ा तो इन शिव मदिंरों के लिए इतने प्रसिद्ध हैं कि यहां प्रत्येक शिवरात्रि के त्योहार को बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाया जाता हैं। शिव मंदिरों के यदि अलग-अलग नामों को गिनाया जाये तो कई एक नाम आ जाते हैं, जो कि आज भी विशेष आस्था के केन्द्र हैं तथा दूर-दूर से दर्शानार्थी यहां पधारते रहते हैं। पधारने वाले लोगों में मात्र घरेलू पर्यटक ही नहीं बल्कि विदेशों से भी भारी संख्या में लोग इन मंदिरों से पहुंचते हैं। इन शिव मंदिरों में विशेष महत्व रखने वाले मंदिर कुछ इस प्रकार से है: भूतनाथ, अर्धनारीश्वर, नीलकंठ, महामृत्युजंय, महाकाल, पचवक्त्र तथा मंदिर त्रिलोक नाथ। इन समस्त महत्वपूर्ण मंदिरों का सम्बन्ध मण्डी, चंबा, कांगड़ा, कुल्लू तथा लाहुल व स्पीति जिला से हैं।

भगवान शिव से संबंधित त्रिलोक नाथ नाम के मंदिर तो कई स्थानों में देखे गये हैं, लेकिन जिला लाहुल स्पीति का त्रिलोकी नाथ मंदिर अपनी विशेष पहचान व महत्ता रखता है। इस मंदिर की मान्यता व आस्था बौद्ध तथा हिन्दू दोनों धर्मो के लोगों में देखी जाती है। शिखर (नागर) शैली का यह मंदिर लाहुल स्पिति के त्रिलोकी नाथ में चन्द्रभागा (चिनाव) नदी के बायें किनारे से थोड़ा ऊपर स्थित हैं। त्रिलोकी नाथ गांव को स्थानीय लोग ओहेन्य व तन्दा नाम से भी पुकारते हैं। मंदिर गांव के ठीक बीचों-बीच स्थित है, जिसका अपना छोटा सा गर्भगृह है जिसमें सफेद संगमरमर से बनी लगभग अढ़ाई फुट की ऊंचाई वाली भगवान शिव की मूर्ति स्थापित है, जिसे लाहुल के लोग भगवान अवलोकितश्वर के नाम से पुकारते हैं। इस प्रतिमा के अवलोकितेश्वर होने का प्रमाण प्रतिमा के शीर्ष (सिर) पर महात्मा बुद्ध की वज्रासन मुद्रा में दिखाई आकृति से लिया जाता हैं। भगवान शिव (अवलोकितेश्वर) की इस मुख्य प्रतिमा को चांदी के सिंहासननुमा कुर्सी पर रखा हुआ है। प्रतिमा के ऊपर की तरफ (सिर पर) एक धातु का छत्र भी सुशोभित है। भगवान शिव की इस प्रतिमा की मुद्रा ललितासन में दिखाई गई है। छ: भुजाओं वाली इस प्रतिमा के दांई ओर के तीन हाथों में से दो को ज्ञानहस्त तथा वरदहस्त मुद्रा में तथा तीसरे हाथ में अक्षय माला को लिये दिखाया गया है। बाईं और के एक हाथ में त्रिशूल, एक में कमण्डल तथा एक सांप के साथ दिखाया गया है। प्रतिमा के हाथों की मुद्राओं व आयुधों से बौद्ध धर्म (दर्शन) की विचारधारा के साथ ही साथ भगवान शिव के आयुधों (हिंदू दर्शन) की भी पहचान मिल जाती है। मूर्ति विज्ञान की दृष्टि से इस प्रतिमा का अपना विशेष ही स्थान बनता है, क्योंकि प्रतिमा में हिन्दू व बौद्ध मूर्तिकला (दर्शन) के तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं, पर कुछ भी कहा जाये प्रतिमा शैव संप्रदाय से संबंधित ही प्रतीत होती है, इसमें कोई दो राय नहीं।

त्रिलोकी नाथ के इस मंदिर के निर्माण के सम्बन्ध में भी कई एक दंत कथाएं प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार कुछ लोगों द्वारा ऐसा माना जाता है कि मंदिर का निर्माण पाण्डवों द्वारा किया गया। कुछ एक लोग ऐसा भी कहते हैं कि मंदिर में प्रतिमा को बाद में रखा गया है। ऐसा भी बताया जाता है कि बहुत पहले हंसा गांव के निकट की सप्तधारा में एक प्रतिमा लद्दाख से उड़कर पहुंची। फिर उसी प्रतिमा की स्थापना इस त्रिलोकीनाथ मंदिर में कर दी गई।

इसी मंदिर के गर्भगृह में भगवान गणेश जी की एक अन्य छोटी सी संगमरमर की लगभग 8 ईंच की प्रतिमा भी है। एक अन्य धातु (महात्मा बुद्ध) की प्रतिमा भी गर्भागृह में देखी गई है जोकि आकार में एक फुट की है। गर्भगृह को बाहर की ओर के स्तंभ सुंदर बेलबूटों से अलंकृत तथा घटपल्लवों से सुसज्जित हैं। घटपल्लवों में प्रतिहार कालीन वास्तुकला का प्रभाव स्पष्ट देखने को मिलता है।

त्रिलोकीनाथ के इसी मंदिर के पीछे की ओर एक अन्य शिखर शैली का छोटा सा मंदिर है। मुख्य मंदिर के बाहर की ओर एक नवनिर्मित सभा मण्डप भी है, जिसका निर्माण स्थानीय लामाओं द्वारा ही किया गया है। सभामण्डप के चारों तरफ धर्मचक्र यंत्र भी श्रद्धालुओं के लिए लगा दिये गये हैं। मंदिर का सारा पूजा पाठ लामाओं द्वारा ही किया जाता है। इस मंदिर की ग्रीवा पर दो आमलक तथा शिखर की ओर भद्रमुख देखे जा सकते हैं। प्रवेश द्वार के नीचे की ओर देवी गंगा-यमुना की सुंदर आकृतियां के साथ ही साथ दो दण्डधारण किए द्वारपालों को भी दिखाया गया हैं। इस तरह से मंदिर निर्माण में वास्तुशास्त्र व मूर्तिशास्त्र का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। लाहुल स्पीति के इस त्रिलोकी नाथ मंदिर तक पहुंचने के लिए लाहुल के प्रसिद्ध चन्द्रा व भागा नदियों के संगम स्थल अर्थात् तांदी से पुल पार करके उदयपुर की तरफ जाने वाले मार्ग से जाना पड़ता है। फिर उदयपुर से पांच या साढ़े पांच किलोमीटर पहले ही कुकम सेरी या आढ़त में उतरकर झुला पुल पार करके तीन या साढ़े तीन किलोमीटर का रास्ता तय करने के पश्चात मंदिर तक पहुंचा जा सकता है। नदी पार करने पर मंदिर पहुंचने से पूर्व रास्ते में ही एक प्राचीन चट्टान आती है। जिस पर पक्षी तथा चक्र (फूल) जैसी आकृतियां तराशी हुई देखने को मिलती है। इन आकृतियों को देखने से यहां की प्राचीन पाषण कला को देखने का अवसर भी मिल जाता है। इस तरह झूला पुल से कुल मिलाकर तीन या साढ़े तीन किलोमीटर की दूरी पर यह मंदिर स्थित है।

त्रिलोकी नाथ के इस मंदिर के निर्माण के सम्बन्ध में भी कई एक दंत कथाएं प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार कुछ लोगों द्वारा ऐसा माना जाता है कि मंदिर का निर्माण पाण्डवों द्वारा किया गया। कुछ एक लोग ऐसा भी कहते हैं कि मंदिर में प्रतिमा को बाद में रखा गया है। ऐसा भी बताया जाता है कि बहुत पहले हंसा गांव के निकट की सप्तधारा में एक प्रतिमा लद्दाख से उड़कर पहुंची। फिर उसी प्रतिमा की स्थापना इस त्रिलोकीनाथ मंदिर में कर दी गई।

संस्कृति

सोलन जनपद में लोक संगीत परम्पराएं

सीमा परिहार

हिमालयी क्षेत्रों में बसे हिमाचल प्रदेश का अपना अलग सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व है। प्राचीन काल से लेकर हिमाचल का विशेष परम्परागत सांस्कृतिक वैभव रहा है जिसकी बदौलत यह राज्य विश्व में अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। स्वतंत्रता पूर्व ये राज्य छोटी-छोटी रियासतों में बंटा था जिनका अपना अलग राजनीतिक और सार्वभौमिक अस्तित्व था। लेकिन स्वतंत्रता उपरात इन रियासतों को जिलों में संगठित कर दिया गया। वर्तमान का सोलन जिला भी स्वतंत्रता से पूर्व अनेक छोटी-छोटी रियासतों में बंटा था। इनमें बाघल, कुनिहार, महलोग, मांगल, नालागढ़, बेजा, कुठाड़ और बघाट रियासतें सोलन जनपद के भाग थे। बघाट रियासत की राजधानी सोलन थी।

सोलन के नामकरण के बारे में अनेक मत प्रचलित हैं। इनमें से सबसे मान्य माता शूलिनी से संबंधित है। शूलिनी या सोलिनी, सात बहनों– ज्वाला देवी, नैनादेवी, हिंगलाज, लोगासिनी देवी, नावग देवी और तारा देवी क्षेत्र में सबसे विख्यात थीं और इसी देवी के नाम पर क्षेत्र का नामकरण सोलन किया गया।

सोलन जनपद के निवासियों ने अपनी समृद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं संजो कर रखी हैं। तीज, त्योहार, मेले और उत्सवों के साथ-साथ विवाह और जन्म-संस्कार कुछ ऐसे अवसर हैं, जब यहां के लोग एकत्रित होकर गीत-संगीत का आनन्द लेते हैं और एक दूसरे के साथ मिलकर खुशियां बांटते दिखाई देते हैं। वैसे तो हर समय काम करते हुए, पनिहार जाते समय, पशु चराते हुए भी यहां के लोग अपने लोक गीत की धुनें गुनगुनाते हुए नजर आते हैं लेकिन फिर भी कुछ विशेष आयोजन हैं जब कुछ विशेष प्रकार के गीतों की धुनें और उनके साथ ताल पर नाचते हुए लोगों को देखा जा सकता है। लोगों की भाषा और वेशभूषा में थोड़ी-बहुत भिन्नता हो सकती है लेकिन गीत-संगीत की बात आये तो उसे गाकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका वही है।

सोलन जिले में लोकगीत मनोरंजन का भी साधन हैं, भावनाओं को व्यक्त करने के लिये परम्परागत गीत जैसे गंगी, शादी के अवसर पर सीठणी, भगवान में श्रद्धा व्यक्त करते भजन और भेंटें, जन्म और विवाह संस्कारों में गाये जाने वाले आशीर्वाद और विवाह गीत आदि विशेष रूप से प्रचलित हैं।

भेंट अथवा भजन : ये गीत भगवान की स्तुति में मंदिर अथवा घर पर गाये जाते हैं। लोग समूह में इकट्ठा होकर, मंदिर अथवा घर पर ही विशेष आयोजन जैसे नवरात्रों आदि के अवसर पर इन गीतों को गाते हैं। इन गीतों में भगवती अथवा भगवान के प्रति श्रद्धा के साथ से भक्त के समर्पण की भावना छिपी होती है।

जय दूर्गे जगदम्बे मेरी माता,
हम शरण तुम्हारी आय हैं'

यथा

चिट्टे-चिट्टे चावला नू खा गई,
इक देवी पहाड़ी दी।
जदो मैं पूछया तेरा नाम की है
ज्वाला देवी बतला गई, इक देवी पहाड़ा दी।

इसी प्रकार देवी स्तुति के साथ ही भगवान कृष्ण की स्तुति में भी बहुत से लोक भजन प्रचलित हैं।

बंसी रा नजारा है
कृष्णा तेरी बंसी रा नजारा हो।

कीर्तन में ही नहीं, बल्कि ब्याह-शादियों और मुण्डन संस्कारों में भी महिलाएं इन भजनों पर नाचती हैं।

संस्कार संबंधी गीत परंपरा : संस्कारों का यहां के लोगों के जीवन में विशेष महत्व है। विभिन्न अवसरों जैसे शादी और जन्म दिन या मुंडन के अवसरों पर विशेष रूप से बधाई गीत गाये जाते हैं।

जन्म संस्कार को राम और कृष्ण से जोड़ते हुए नवजात शिशु को श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण का स्वरूप माना जाता है। इस अवसर पर प्रचलित गीतों में :

आज अयोध्या में राम जन्म होता है।
बांसुरी बाज रहे, कृष्ण भजन होता है।

विवाह संस्कारों में तेल-बटणा से लेकर विदाई गत और वधू के गृह-प्रवेश तक विभिन्न प्रकार के गीत प्रचलित हैं। तेल-बटणा वाले गीत वर और वधु दोनों के लिये एक समान हैं। जब वर और वधू को तेल और उबटन लगाया जाता है तो बहनें, भाभी, चाची, ताई, दादी-मामी इस प्रकार से मंगल मान करती हैं:

तेलिया-मेलिया तेल पावे रल मिल मंगल गाईये,
तेलिया मेलिया, मंगल गावे, सात सुहागिन तेल पावे,
माता सुहागिन तेल पावे, रल मिल मंगल गाईये।
ताई सुहागिन तेल पावे, रल मिल मंगल गावे।
भाभी सुहागिन तेल पावे रल मिलन मंगल गावे।

इस गीत में हमने देखा कि सुहागिन महिलाएं ही वर और वधु को तेल-बटणा लगाती है जिनमें पहला तेल माता का होता है। लेकिन एक आखिरी तेल कुंआरी कन्या द्वारा भी लगाया जाता है। उसके बाद वर-वधू के स्नान के अवसर पर भी गीत गाये जाते हैं।

अंविए तंबिए पाणी तपोया,
कृष्ण मल-मल नहाईये,
लाओ रे भईया दही कटोरा,
कृष्ण के सिर नहाईये।

इसमें दूल्हा कृष्ण का रूप है, जिसे दही के कटोरे से नहलाया जा रहा है।

शांति पूजा के समय में :

जाओ भैया जी परोयता,
बन्ना दी जी शांत प्रतिष्ठिये,
जाओ भैया जी गंगा बी पाराते, पुष्प-फूल नैवेद्य लाईये।

सेहरा बंदी के समय में भी गीतों का विशेष महत्व है। जिस समय पुरोहित सेहरा बांधना शुरू करता है उस समय कुछ महिलाएं गीत गाकर ही पुरोहित से सेहरा बंदी का आग्रह करती हैं।

सेहरा तेरा बे बाना बुनत-बुन बे रईये।
कपड़े तेरे बे बाना दर्जी सिल बे रईये।

इसी प्रकार स्वागत गीत भी प्रचलित हैं जो बारात के दुल्हन के घर में प्रवेश के अवसर पर गाये जाते हैं। इन गीतों में तो दुल्हे को श्रीराम का स्वरूप मानकर उनके घर आने पर आभार व्यक्त किया जाता है।

आज तो राम जी घर पधारे है
आनन्द ही आनन्द राम जी है पावणे।

उसके बाद वेदी-गीत सिर गुंदाई, सुहाग-गीत विदाई गीत आदि गाने की परंपराएं हैं और पूरा विवाह समारोह इन गीतों के बीच ही सम्पन्न होता है। शादी के अवसर पर सोलन और शिमला के क्षेत्रों में व्यंग्य गीत भी गाये जाते हैं। इन गीतों में बारात के वधू के घर पहुंचने पर खाना खाते समय स्त्रियां वर के पिता, ताया, चाचा और मामा आदि पर व्यंग्य गीत के माध्यम से खूब खरी खोटी सुनाती हैं। इन गीतों को सीठणी कहते हैं। कुछ विशेष 'सीठ्णी' इस प्रकार हैं:

ऐ लाड़ा भूखा आया है, मैं खीचड़ी बनावां
लाड़े दा बापू भूखा आया मैं खीचड़ी बनावा
आटा नी घराटे जा, शाकर नी मटाके खा,
घियुआ रा हूंदा गुटठा।

खास बात ये है कि इन गीतों में स्त्रियां जितना मर्जी व्यंग्य करें, वर पक्ष वाले उनका बुरा नहीं मनाते और उनका अधिकार मानते हैं।

गंगी : गंगी भी सोलन के लोकगीतों में विशेष महत्व रखती है। लोग घास काटते खेतों में काम करते और पशु आदि चराते हुए गंगी गाया करते थे। इनमें गंगी की विशेषता यह है कि इसमें नायक-नायिका एक दूसरे की बात का प्रत्युत्तर देते दिखाई हैं। यथा–

नायिका :–
तेरी पीठी पांदे लाल बसता
पारी यान जाए छोरूआ
अब छाड़ी दे, पुराणा रास्ता।

नायक :–
फुल-फुलेया पार टिकरे
मैं तो तिजो जरूर मिलणा
मेरा जिऊ सुको तेरे फिकरे।

नाटी : शादी, मेलों, त्योहारों पर लोग नाटी पर नाचना पसन्द करते हैं। नाटी धीमे स्वर में गाई जाती है और नाटी पर दो व्यक्ति नाचते और बाकी चारों ओर से गोल चक्र में बैठ गाते हैं। लेकिन विवाह आदि में वाद्य यंत्रों पर भी नाटी बजाई जाती है, बहुत से लोग मिल कर नाच का आनन्द लेते हैं। नाटी में –

शैली रे जंगले चिकणी माटी
बेठी लो भुई दी, शुणी लो नाटी।

जिले की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत हमें मेले, त्योहारों और उत्सवों में देखने को मिलती है। आज की युवा पीढ़ी आधुनिकता के प्रभाव में आकर हम इन परंपराओं को भूलती जा रही है।

सोलन जनपद के निवासियों ने अपनी समृद्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं संजो कर रखी हैं। तीज, त्योहार, मेले और उत्सवों के साथ- साथ विवाह और जन्म-संस्कार कुछ ऐसे अवसर हैं, जब यहां के लोग एकत्रित होकर गीत-संगीत का आनन्द लेते हैं और एक दूसरे के साथ मिलकर खुशियां बांटते दिखाई देते हैं। वैसे तो हर समय काम करते हुए, पनिहार जाते समय, पशु चराते हुए भी यहां के लोग अपने लोक संगीत की धुनें गुनगुनाते हुए नजर आते हैं लेकिन फिर भी कुछ विशेष आयोजन हैं जब कुछ विशेष प्रकार के गीतों की धुनें और उनके साथ ताल पर नाचते हुए लोगों को देखा जा सकता है। लोगों की भाषा और वेशभूषा में थोड़ी-बहुत भिन्नता हो सकती है लेकिन गीत-संगीत की बात आये तो उसे गाकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका वही है।

उरछ जो सुरक्षित रखता है अनाज

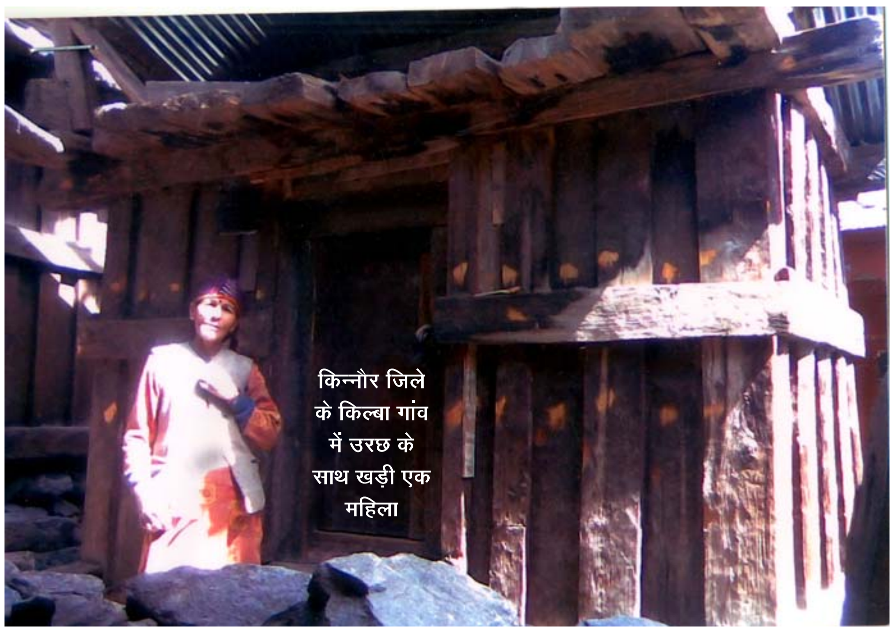

किन्नौर जिले के किल्बा गांव में उरछ के साथ खड़ी एक महिला

पवन चौहान

उरछ अर्थात् अनाज भण्डारण का कमरा। इसे कोठार भी कहा जाता है। देवदार के मोटे-मोटे शहतीरों से बने इस उरछ की अपनी ही एक खासियत है। उरछ की छत को बनाने में भोजपत्र, मिट्टी और लकड़ी का प्रयोग होता है ताकि छत से बारिश का पानी अंदर न रिस सके। इसकी दीवारों में प्रयुक्त लकड़ी को भी एक-दूसरे के ऊपर सटाकर ऐसे जोड़ा जाता है जिससे पानी का अंदर प्रवेश न हो सके। दीवारों में मिट्टी का प्रयोग नहीं किया जाता।

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिलों ने आज भी समृद्ध संस्कृति पारम्परिक धरोहरों को संजो कर रखा है। इन्हीं धरोहरों में है **उरछ** अर्थात् अनाज भण्डारण का कमरा। इसे कोठार भी कहा जाता है। देवदार के मोटे-मोटे शहतीरों से बने इस उरछ की अपनी ही एक खासियत है। उरछ की छत को बनाने में भोजपत्र, मिट्टी और लकड़ी का प्रयोग होता है ताकि छत से बारिश का पानी अंदर न रिस सके। इसकी दीवारों में प्रयुक्त लकड़ी को भी एक- दूसरे के ऊपर सटाकर ऐसे जोड़ा जाता है जिससे पानी का अंदर प्रवेश न हो सके। दीवारों में मिट्टी का प्रयोग नहीं किया जाता। कमरेनुमा इस भण्डार में लकड़ी से बने अलग-अलग खाने बने होते हैं। उरछ की दीवारों के साथ लगे खानों का आकार बड़ा होता है। जिसमें एक आदमी तक भी समा सकता है। इन बड़े खानों के आगे साथ ही और खाने होते हैं जो आकार में छोटे होते हैं।

परिवार की संख्या के अनुसार उरछ बड़े-छोटे होते हैं। जो अनाज अधिक मात्रा में हो उसे बड़े खानों तथा जिस अनाज की पैदावार कम होती है। छोटे खानों में रखा जाता है। उरछ के अंदर फाफरा, ओगल, कोदरा, राजमाह, मक्की, गेहूं, सुखी चुली, खुमानी, काट कर सुखाए गए सेब रखे जाते हैं। सर्दियों के लिए मीट सुखाकर भी इसी उरछ के अंदर टांग कर रखा जाता है। यूं तो उरछ एक मंजिला होता है पर कहीं-कहीं हमें दो मंजिला उरछ भी दिख जाते हैं।

उरछ के अंदर जाने के लिए लगा दरवाजा लगभग खिड़की के आकार का होता है। उरछ में यह दरवाजा फर्श के साथ न लगकर थोड़ा ऊपर होता है। जिससे उरछ के अंदर जाते ही दो-चार पद सीढ़ी से नीचे फर्श तक पहुंचने के लिए उतरना पड़ता है। ये उरछ घर से सटा कर नहीं बल्कि घर से थोड़ी दूरी पर होते हैं। ताकि चूहे वगैरह के प्रकोप से घर सुरक्षित रह सके। वैसे तो ज्यादातर लोगों ने उरछ का निर्माण साधारण तरीके से ही किया है लेकिन इन सबके बीच हमें कुछेक उरछ ऐसे भी मिल जाते हैं जिन पर नक्काशी हुई है।

किल्बा गांव के लाला शिवराम के अनुसार पहले जब इन इलाकों में बहुत अधिक बर्फ पड़ती थी और ये इलाके कई-कई महीने बर्फ से ढके रहते थे तो उरछ का निर्माण हुआ ताकि बर्फ में अनाज अच्छी तरह से सुरक्षित रह सके। वैसे तो ज्यादातर लोगों ने उरछ का निर्माण साधारण तरीके से ही किया है लेकिन इन सबके बीच हमें कुछेक उरछ ऐसे भी मिल जाते हैं जिन पर नक्काशी हुई है।

किल्बा गांव के लाला शिवराम के अनुसार पहले जब इन इलाकों में बहुत अधिक बर्फ पड़ती थी और ये इलाके कई-कई महीने बर्फ से ढके रहते थे तो उरछ का निर्माण हुआ ताकि बर्फ में अनाज अच्छी तरह से सुरक्षित रह सके। लेकिन अब तो मौसम में काफी बदलाव आ चुका है। आज हरेक गांव सड़क से जुड़ जाने के कारण उरछ का निर्माण कम हो रहा है।आज सुविधा हरेक गांव तक पहुंच रही है लेकिन उरछ आज भी अपना महत्व बनाए हुए है। जिनके पास उरछ सुरक्षित बचे हैं वे आज भी उनका उपयोग करते हैं जो उस समय की याद को ताजा करवाता है जब स्थानीय लोगों ने कठिन परिस्थितियों के बावजूद भी अपने अनाज व अन्य खाद्य सामग्री के लिए एक ऐसा पुख्ता इंतजाम किया हुआ था जो महीनों बर्फ में रहने के बावजूद अनाज को तो सुरक्षित रखता ही था।

कहानी

दंश

● जसविंदर शर्मा

'पड़ोस की डोली पड़ोस में नहीं उठा करती। दुबारा रतन से मिली तो फिर उसी जगह तेरी कब्र बना दूंगा।' यादों के न जाने कौन से अंधेरे कोने से उसे लम्बरदार के कहे हुए ये वाक्य याद आ गये। क्या सच में अपनी अंधी हवस में इतना पागल हो जाता है इंसान। ऋतु को भी अजीब सी जिद हो गई थी जिस रतन ने उसकी दीदी की जिन्दगी तबाह कर दी थी, उसे एक बार झांसे में लेकर इंतकाम लेना चाहती थी वह। इंतकाम की आग तो न बुझा पाई उल्टा उसका अपना दामन दागदार हो गया। रतन उसे मिला भी मगर वह उस निर्लज्ज का बाल भी बांका न कर पाई। अब शीशा अगर पत्थर से टकरायेगा तो जरा सी खरोंच से शीशा स्वयं ही चकनाचूर हो जायेगा। ऋतु के साथ भी ऐसा ही हुआ।

अब वह एक रीता हुआ बादल का टुकड़ा थी। हर दिन का आगाज उसी आशा से होता। एक दिन, एक महीना, एक साल, एक दशक, कहां तक कोई गिनता जाये। उम्मीद हर रोज मर कर भी फिर जिन्दा होती रही। एक तपते हुए निर्जन मरुस्थल की तरह नीरस और प्राणहीन हो गया था उसका जीवन। उसकी इस लम्बी बेरौनक जिन्दगी के चालीस वसंत बीते, वसंत नहीं, उन्हें पतझड़ कहना ज्यादा मुनासिब रहेगा। कई बार वह सोचती, किस का इंतजार करती रही वह इतने बरस। उसका–जो उसे हकीकत में छोड़कर फिर नहीं पलटा या फिर उसका जो उसके ख्याबों-ख्यालों की उपज था। कौन था वह जिसके तस्सवुर में उसने पूरा जीवन खपा दिया? क्या सच में उसका कोई वजूद था भी या वह किसी मृग मारीचिका के पीछे ताउम्र भागती रही।

'अब मुझको चैन है तो सबको करार है, दिल क्या संभल गया कि जमाना ठहर गया।' सुबह-सुबह ऋतु ने अपनी डायरी से यह शे'र पढ़ा तो एक ठण्डी आह उसके मुंह से निकल गई। वे भी क्या दिन थे जब मन भटकता था, दसियों दिशाओं में उसे दौड़ाता था। हर रोज सूरज उगने के साथ उसे उम्मीद बंध जाती कि आज कोई चमत्कार होगा। जिन ख्वाबों को वह इतने बरसों से दिन-रात सोते-जगते देखती आ रही है, शायद आज वे सच हों मगर शाम हो वही गहरी और उदास तन्हाई उसको अपने सर्द आगोश में ले लेती।

उसके दिलो-दिमाग पर जिन दंशों के सबसे ज्यादा गहरे दाग उभरे थे उनमें ये तीन सबसे अधिक तकलीफदेह थे–पहला प्यार, पहला पति और पहला बच्चा। उसके बाद तो जो कुछ हुआ वह तो अपने-आप में छलावा था, बिना सोचे-समझे किया गया एक समझौता था जिन्दगी से। आज तक अपने सैंकड़ों कहानियां लिखी मगर उसका अपना दर्द तो अनछुआ ही रह गया। आज ऋतु ने सोच लिया कि वह अपनी कहानी लिखेगी। इन जलाती हुई यादों के संताप से मुक्ति उसे तभी मिलेगी जब वह अपने दुख-दर्द का इतिहास कागज के कोरे पन्नों पर उतार देगी।

वह भी कितनी बावरी लड़की थी। पूरे गांव में सबसे सुन्दर और स्मार्ट। घर के हालात उसके पक्ष में नहीं थे। होश संभाला तो पिताजी को घर पर ही देखा। फौज से रिटायर हो चुके थे। जमीन का ही सहारा था उन्हें और जमीन की फसल बारिश के सहारे थी। किसी बरस तो बल्ले-बल्ले हो जाती और किसी साल गिन-गिन कर तंगी में दिन कटते। चलो मेहनत मशक्कत तो अपने हाथ में थी। मिट्टी के साथ मिट्टी होकर रूखी-सूखी नसीब हो जाती मगर नसीब में क्या बंधा है, इस पर ऋतु या स्वीटी का क्या बस चलता।

स्वीटी बड़ी बहन थी ऋतु की। इतनी सुन्दर कि लगता था कि हाथ लगाते ही मैली हो जायेगी। ये ऊंची लम्बी, गोरी-गद्दर, खिड़-खिड़ करती हंसती हुई दीवार समान जवान लड़की। उसे देखकर मां को डर भी लगता था कि कहीं कुछ हो न जाये। कितनी संभाल की जरूरत है इसको। मां बार-बार लम्बरदार की बात सुनाती रहती। उसके लड़के के साथ स्वीटी का नाम जुड़ा तो लम्बरदार ने पिताजी को बुलाकर समझाया था, 'देख हवलदारा, पड़ोस का मामला है नहीं तो मुझे इस रिश्ते से कोई इंकार नहीं था। मैं आज के जमाने का आदमी हूं। बच्चों के इश्क मुहब्बत के मामले में मैं ज्यादा परेशान नहीं होता। बाकी एक बात में तुझे बता दूं कि लड़कों का क्या है,बाहर जाकर कुछ भी गंदगी घोल आयें, घर आकर नहा-धोकर ऐन साफ सुथरे हो जाते हैं ये ससुर की नाती। मगर लड़की जात है न, तू खुद जानता ही है। मेरी भी दो लड़कियां हैं, अब यूं समझ लें कि कनक से सिट्टों में से हवा निकल जाये न तो फिर उनके दाने में रस नहीं डलता, पकने की तो बात ही भूल जा। कहीं फकीरी को दाग न लग जाये। संभाल कर अपनी बेटी की। कहीं और उसे ब्याह दे फटाफट।'

वही हुआ जिसका खटका मां को हमेशा लगा रहता था। ऐसा क्यों होता है कि अनहोनी की हल्की सी भनक हमें बहुत पहले लग तो जाती है मगर उससे बचने का कोई विकल्प हमें सूझ नहीं पाता और एक बार हम तकदीर के लपेट में आ गये तो छटपटाने के सिवा हम कुछ कर नहीं पाते। इन्सानी रिश्तों और संवेदनाओं के धागे आपस में इतने उलझे हुए होते हैं कि उनसे एकदम छिटक कर अलग हो जाना इतना सहज काम नहीं है। उलझे हुए कटु सम्बन्धों में से बाहर आने में कई बार तो पूरी जिंदगी लग जाती है।

स्वीटी लाल दुपट्टे में लिपटी रोती बिलखती विदा हुई। सुन्दरता में ऋतु का जीजा कुछ कम नहीं था। ऊंचा लम्बा, गोरा व रौबीला जवान था वह। एमए पास था। फौज में ऐजुकेशन हवलदार था। आर्मी अफसर बनने के पूरे चांस थे उसके। स्वीटी बहुत दिलेर लड़की थी। कम से कम ऋतु से तो बहुत दिलेर थी। कभी-कभी बहुत समझदारी की बात बताती थी उसे। एक काम की बात बताकर गई थी उसे। 'ऋतु, जिन्दगी में औसत किस्म की चीजें ही ज्यादा सुख दे पाती हैं। गांव के जिस सुन्दर सुनक्खे गबरू से मैंने दिल लगाया था, वह तो मेरे रूप का प्यासा निकला। मुझसे मन भर गया तो तेरे दिल से खिलवाड़ किया उसने। ज्यादा लुभावने वाली चीजें बहुत बड़ा दुख देकर जाती हैं। एक दरम्यानी किस्म की चाहत टिकने वाली चीज होती है। तेरा जीजा ढूंढा था न हमने-लाखों में एक। नजर लग गई न उसे।'

ऐसा क्यों होता है कि अनहोनी की हल्की सी भनक हमें बहुत पहले लग तो जाती है मगर उससे बचने का कोई विकल्प हमें सूझ नहीं पाता और एक बार हम तकदीर के लपेट में आ गये तो छटपटाने के सिवा हम कुछ कर नहीं पाते। इन्सानी रिश्तों और संवेदनाओं के धागे आपस में इतने उलझे हुए होते हैं कि उनसे एकदम छिटक कर अलग हो जाना इतना सहज काम नहीं है।

अपने होनहार जीजा का असली चरित्र ऋतु पर तब खुला जब ऋतु अपनी बहन से मिलने पहली बार उसके ससुराल गई। बीएड की प्रेक्टिकल ट्रेनिंग उसी शहर में थी उसकी। ऋतु को अपनी बहन से रश्क हो रहा था कि उसकी शादी अच्छे घर में हुई। ऋतु के जीजा उसे हर रोज उस स्कूल में छोड़ आते जहां उसकी ट्रेनिंग थी। बस आखिरी दिन वह अनहोनी हुई थी। भगवान ने औरतों को इतनी कच्ची मिट्टी से क्यों बनाया कि जरा भी टक्कर लगी नहीं कि सारा तामझाम बिखर जाता है। उस दिन शाम को ऋतु के जीजा उसे स्कूल से लेने भी आ गये और बाजार में भी घुमाया फिराया। एक कैफे में जाकर वे बैठे। उसके जीजा ने पता नहीं कोल्ड ड्रिंक में ऐसा क्या मिला दिया कि ऋतु के होश डूबते चले गये। एक लम्पट बहनोई ने उस कुंवारी लड़की का दामन कीचड़ से लथपथ कर दिया।

दो घंटे बाद जब ऋतु को होश आया तो उसने अस्त-व्यस्त कपड़ों को देखकर उसे अहसास हो गया कि वह लुट चकी है। जीजा विजयी मुद्रा में खड़ा मुस्करा रहा था। धोखे से नशे की गोली खिलाकर उसका जीजा उसे एक दोस्त के घर में ले आया था। अपनी बहन स्वीटी का ख्याल आते ही ऋतु ने अपना मुंह बंद रखने में ही समझदारी समझी। सुनकर मां-पिताजी के दिल पर क्या बीतती। उस कुकर्म से एक बच्चे को भी जन्म दिया उसने जो इस समय किसी गुमनाम अनाथालय में पल रहा होगा।

बीएड करने के बाद एक सरकारी स्कूल में ऋतु को नौकरी मिल गई। कई जगह से रिश्ते की बात भी उठी मगर ऋतु ने स्वयं ही टालमटोल कर दिया। कड़वा और भयावह अतीत हर समय उसके जेहन में डरावने ख्याल और विरोधी विचार उठाता रहता। अपनी दीदी स्वीटी की तरह अगर उसका पति भी लम्पट और दुराचारी...तब तो आत्महत्या ही कर लेगी वह। स्वीटी तो मोटे दिमाग की है, सब कुछ जानते हुए भी मस्त रहती है।

जवानी की दहलीज पर वह भी एक बार ऐसी फिसल गई थी कि उसके बाद सारी उम्र वह संभल न सकी। अब वह शादी कर भी लेती मगर अतीत में जीये हुए अपराध ग्रस्त मंजर उसे सुखी कहां रहने देते। फिर अब उसे पक्का विश्वास हो चला था कि आदमी की नजर में औरत बस हवस का एक जरिया है। प्यार- मुहब्बत की बातें सिर्फ किताबी कहानियां किस्से हैं। अब वह भी इन लफ्फाजी जज्बातों से खेलने लगी थी। आसपास लोगों के दुख-दर्द पर कई अफसाने लिख डाले थे उसने। आदमी को राक्षस और नीच पापी तक और न जाने क्या-क्या दिखाती रहती वही। इस बीच उसका अतीत कई बार उससे रू-ब-रू हुआ मगर अब ऋतु के दिल में नफरत के सिवा कुछ भी शेष नहीं था। बालों में सफेदी उतर आई थी, मुंह पोपला हो गया तथा हाथों-पैरों पर झुर्रियां पड़ गई मगर फिर भी उसे लगता था कि कभी न कभी उसे उसके सपनों का राजकुमार मिलेगा।

कविता

कागज के प्रति

कागज में, धीरज होता है
धरती की तरह
पह अजातशत्रु
नहीं बदलता अपने बयान
रोज-रोज।
तटस्थ-निर्लिप्त-निर्विकार सा
हर सभा, हर मौसम में
जैसा लिख दिया
वैसा ही दिखता है अपने आपको।
नहीं बदलता टोपियां और पाले
और न ही गिरगिट सा रंग
बांटता है खुशियां
और कभी सहेजता है
अकल्पनीय दुःख
फिर भी उफ, तक नहीं
ढोता है अपनी पीठ पर
वर्षों, युगों तक
सभ्यता के अवशेष,
संस्कार-आचार-विचार।
युग परिवर्तन के 'क्रांति बीज'
इसी ने उगाए सर्वप्रथम
अपनी उर्वरा-धरा पर,
और कभी शांति दूत बन
मानव को बचाया विनाश से
'शब्द शिल्पी' का यह 'वाहक'
मृत्युपर्यन्त निभाता है निष्ठा।
जल जाने पर भी
शब्द-चित्र प्रतिबिंबित होते हैं,
स्रष्टा के प्रति यह समर्पण ही
सर्वोपरि बना देता है उसे।।

–मामराज शर्मा

क्या आप जानते हैं?

देश की सर्वाधिक लक्जरी रेलगाड़ी महाराजा एक्सप्रेस

देश की सर्वाधिक सुपर लक्जरी रेलगाड़ी महाराजा एक्सप्रेस का परिचालन मार्च 2010 में शुरू हुआ है। इण्डियन रेलवेज कैटरिंग एण्ड टूरिज्म कार्पोरेशन (आईआरसीटीसी) व निजी क्षेत्र की ट्रेवल कम्पनी कॉक्स एण्ड किंग्स (इंडिया) लि. के संयुक्त उपक्रम रॉयल इंडियन रेल टुअर्स लि. द्वारा संचालित यह रेलगाड़ी मुम्बई-दिल्ली के बीच 6 मार्च, 2010 से व कोलकाता-दिल्ली के बीच 20 मार्च, 2010 से चलाई गई है। मार्ग में प्रमुख पर्यटक स्थलों का भ्रमण कराते हुए यह रेलगाड़ी 6-7 दिन में अपनी यात्रा पूरी करती हैं तथा एक रात्रि का किराया लगभग एक लाख रुपये है।

1. भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस के जी. बालाकृष्णन द्वारा देश का पहला मॉडल ई न्यायालय फरवरी 2009 में किस राज्य में शुरू किया गया?
2. भारत में लोक सेवा आयोग की सर्वप्रथम स्थापना किस अधिनियम के द्वारा हुई थी?
3. चन्द्र ग्रहण कब होता है?
4. भारत के पहले मुख्य न्यायाधीश कौन थे?
5. मराठा और केसरी समाचार पत्र किसने सम्पादित किये थे?
6. पंचतंत्र किस काल में लिखा गया था?
7. सौर मण्डल का सबसे बड़ा ग्रह कौन सा है?
8. रेल का सबसे बड़ा नेटवर्क विश्व के किस देश में है?
9. नर्मदा नदी का उद्गम स्थल कहां है?
10. 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' के लेखक कौन है?
11. महात्मा गांधी पहली बार शिमला कब आये थे?
12. यमुना का उद्गम स्थल कहां है?
13. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पहले कुलपति कौन थे?
14. 'मलाणा इन सर्च ऑफ' डॉक्यूमेंटरी फिल्म के निर्देशक कौन हैं?
15. शिमला से भारत छोड़ो आंदोलन का संचालन किसने किया था?
16. कांगड़ा जिले के किस स्थान पर अशोक ने एक स्तूप का निर्माण करवाया था?

प्रस्तुति–नर्बदा

उत्तर-गुजरात (अहमदाबाद), 2. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1919, 3. जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आ जाती है, 4. न्यायमूर्ति हीरालाल जे. कानिया, 5. लोकमान्य तिलक ने, 6. गुप्त काल, 7. सूर्य, 8. अमेरिका, 9. अमरकंटक, 10. महात्मा गांधी, 11. 1921 में, 12. यमनोत्री, 13. आर.के. सिंह, 14. विवेक मोहन, 15. राजकुमारी अमृतकौर ने, 16. चैतड़ू में।

लेख

ईश्वरीय अभिशाप नहीं विकलांगता

जीतने वाला थकता नहीं,
थकने वाला जीतता नहीं,
जो मानव-पुष्प जीता है कांटों में भी
वह विकलांगता नहीं।

कविता की ये पंक्तियों सचमुच यह बयां करती हैं कि भले ही मानवीय जीवन में कितनी ही कठिनाइयां, विकृतियां, कमजोरियां, बाधाएं आ जायें, अगर उन पर समाज के लोग काबू पाने का ईरादा और मादा रखते हैं तो गिरे हुए, उपेक्षित, लाचार, बेबस इंसानों को जिन्दगी की दौड़ में शामिल कर सकते हैं। फिर कोन कहेगा कि विकलांगों को जीना नहीं आता। हर प्राणी जीना चाहता है, राष्ट्र और समाज की मुख्य धारा से जुड़ना चाहता है, फिर विकलांग ही क्यों न हों। विकलांग मनुष्य क्या नहीं कर सकते, गर्व से जी सकते हैं यदि स्वस्थ मानव विकलांगों का साथ दें, सहारा दें, हिम्मत दें, इज्जत और सम्मान दें तो विकलांगता का लगा यह दाग खुद व खुद मिट जायेगा।

विश्व समाज के अंदर कई प्रकार की समस्यायें हैं। इन समस्याओं से विकसित देश भी अछूते नहीं हैं, विकासशील देशों में भी तो स्थिति बेहतर नहीं है। एशिया और अफ्रीकी देशों में लोग हर प्रकार की समस्याओं से उभरना चाहते हैं लेकिन इन देशों में मुख्यत: जनसंख्या वृद्धि, अकाल, भोजन पानी का अभाव, पूंजी का अभाव, अनपढ़ता, अंधविश्वास, जागरूकता का अभाव, स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेकों समस्यायें हैं, लेकिन कुपोषण, अशिक्षा, पुनर्वास की समस्याएं अन्य समस्याओं को जन्म दे रही हैं।

बहुधा लोग विकलांगता को ईश्वरीय अभिशाप मानते हैं, प्रकृति की घटना मानते हैं। जब हम प्रकृति के विपरीत कोई भी कार्य करते हैं तो मनुष्य के जीवन में विकृतियां आना स्वाभाविक ही है। ठीक उसी तरह कुपोषण भी प्रकृति के विपरीत है। कुपोषण से ही विकलांगता जैसी बीमारियां जन्म लेती हैं। अत: विकलांगता ईश्वरीय अभिशाप नहीं, यह तो मनुष्य जनित ही है।

विकासशील देशों में कुपोषण का कारण गरीबी, जागरूकता की कमी और अशिक्षा मुख्य घटक है। खासकर गरीब और दलित तपका कुपोषण का शिकार हो रहा है और दूसरी ओर जागरूकता की कमी के कारण आर्थिक सम्पन्न लोग सामाजिक घटनाओं के शिकार हो रहे हैं जिसके चलते वे शिक्षित एवं सुपोषित होते हुए भी विकलांगता के शिकार हो रहे हैं और समाज, परिवार, राष्ट्र के लिए बोझ बनते जा रहे हैं। फिर भी वे बोझ नहीं हैं अगर उन्हें समय पर समाज द्वारा संवारा जाये।

● प्यार सिंह ठाकुर

संयुक्त राष्ट्र संघ की 'विश्व सामाजिक स्थिति रिपोर्ट-2010' में कहा गया है कि दलितों की, खासकर सेहत के मामले में स्थिति काफी गंभीर है। कारण यही है कि खानपान उचित नहीं है।

अपंगता या विकलांगता दो प्रकार की होती है-शारीरिक और मानसिक। शारीरिक विकलांगता के कई प्रकार हैं जैसे पूर्ण अंधापन या दृष्टिदोष, चलने फिरने में कठिनाई, सुनने बोलने में कठिनाई इन्हें मूक बधिर कहा जाता है।

भारत सरकार द्वारा पीडब्ल्यूडी एक्ट यानी पर्सन्ज विद डिस्एबीलिटीज एक्ट बनाया गया है। इस अधिनियम का उद्देश्य है विकलांगों को विभिन्न क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करना, उनके अधिकारों का संरक्षण करना, उनका सशक्तिकरण करना ताकि वे देश की विकास प्रक्रिया में पूर्णरूप से सहभागी बन सकें। इस अधिनियम के तहत यह भी प्रयास किया गया है कि विकलांगों को विशेष कानूनी अधिकार भी दिया जाये, जिसकी आवश्यकता पड़ने पर न्यायालय द्वारा कार्यान्वयन भी हो सके।

एक अन्य संवैधानिक निकाय भारतीय पुनर्वास परिषद के द्वारा विकलांगों के पुनर्वास के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। इस संस्था का कार्य विकलांगों के पुनर्वास से जुड़े विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देना और विभिन्न संस्थाओं में इसके लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जांच करना और उन्हें मान्यता प्रदान करना है। राष्ट्रीय विकलांग वित्त और विकास निगम के द्वारा विकलांग व्यक्तियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है ताकि वे स्वरोजगार हासिल कर सकें। इसके साथ ही सरकार इस संदर्भ में स्वयंसेवी संगठनों की भी मदद ले रही है।

हिमाचल प्रदेश में विकलांगों की ज्यादा संख्या नहीं है फिर भी विकलांगों के लिए नौकरी आत्मनिर्भरता, शिक्षा स्वास्थ्य, आवास का सुचारू प्रबन्ध किये गये हैं। राज्य में प्रयासों में यहां कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

तुलसी की महिमा

भारत की हर बात निराली है। यहां निर्जीव वस्तुओं का भी श्रद्धा से पूजन किया जाता है। भले ही वह जल, थल, आकाश, नदी, पत्थर अथवा कोई पेड़-पौधा ही क्यों न हो। हमारी परम्पराओं में तुलसी का श्रेष्ठ स्थान है। घर के आंगन में तुलसी का होना बड़ा शुभ माना जाता है। भारतीय जनमानस की इस पौधे में गहरी आस्था है। हर दिन सुबह- शाम धूप-दीप जलाकर इसकी पूजा की जाती है। तुलसी का इतना महत्व क्यों है?

एक पौराणिक कथा अनुसार जालंधर राक्षस देवताओं पर बहुत अत्याचार करता था। भगवान शिव ने देवताओं की प्रार्थना पर उस दैत्य का संहार किया था।

उसकी पत्नी वृंदा देवी भगवान शिव की परम भक्त थी। पतिव्रता पति के वियोग में सती हुई थी। भगवान विष्णु के वरदान से वह तुलसी में परिवर्तित हुई और घर-घर पूजी जाने लगी। गोस्वामी तुलसी दास ने माता सती वृंदा को परम सती के नाम से सम्बोधित किया है। वहीं रामायण में भी वर्णन मिलता है कि देवताओं और असुरों में समान रूप से पूज्य होने के कारण इसे महासती का दर्जा दिया गया है। इसी देवी ने देवताओं को श्राप दिया और भगवान विष्णु ने इसी को वरदान दिया। यही नहीं एक बार जब भगवान कृष्ण को सारी दुनिया की सम्पत्ति से तोला गया तो तुला का दूसरा हिस्सा भगवान कृष्ण के बराबर न हो सका, वहीं तुलसी के दो पत्ते डालने मात्र से तुला बराबर हो गई।

तुलसी का धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। इस पौधे के स्पर्श मात्र से पापों का नाश हो जाता है। जिस घर में तुलसी का पौधा सम्मान के साथ पूजित होकर लगाया जाता है उस घर में हमेशा शांति रहती है और घर की स्त्री कभी असाध्य रोगों से पीड़ित नहीं रहती।

तुलसी पूज्य पौधा है। इसका एक-एक पत्ता वैष्णवों के लिए द्वादशक्षर मंत्र ऊं नमो भगवते वासुदेवाय की भांति प्रभाव करने वाला है। एक ओर पूजा की सारी सामग्री एवं दूसरी ओर तुलसी की पत्तियां हैं। परन्तु तुलसी पत्तियों की बराबरी अन्य सभी पूजा सामग्री मिलकर नहीं कर सकतीं। साध्य, तर्पण, दान, नैवेद्य, अर्पण तथा देवार्चन कोई भी कर्म बिना तुलसी पत्र के पूरा नहीं होता। हिन्दुओं के लिए तुलसी उनके धर्म कार्य तथा संस्कारों हेतु अनिवार्य वस्तु है। चाहे मनुष्य के पास कितना भी पानी क्यों न हो पर मृत्यु के समय उसके प्राण तुलसी और गंगा जल मुख में रख कर निकल जाते हैं। वेद इस बात के साक्षी हैं कि तुलसी विवाह 'कन्यादान' सा फल देते हैं।

–अशोक सरीन

बाल कविता

बात सीख की

बोली मम्मी-
मुन्ने राजा
उड़ा पतंग न
घर में आजा।

लगी चोट तो
फिर पछताये,
गया समय वो
फिर न आये।

गिरकर छत से
पैर तुड़ाओ।,
पलंग पकड़कर
फिर पछताओ।

लेकिन मुन्ना
एक न माना,
पैर तुड़ाकर,
मन में ठाना-

नहीं पतंग मैं
कभी उड़ाऊं
बात सीख की
सदा निभाऊं।

–महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

ग्रीष्म ऋतु में स्वास्थ्य व सौंदर्य

- गर्मी के मौसम में त्वचा सूखी रहती है। अत: पानी का भरपूर सेवन करें।
- त्वचा की गर्मी दूर करने के लिए पुदीना पीसकर चेहरे पर लगायें। 10-15 मिनट बाद धो लें। इससे गर्मी तो दूर होगी ही साथ ही चेहरे की त्वचा खिल उठेगी।
- गर्मी के मौसम में आम का सेवन करने से त्वचा का रंग साफ होता है और रूप निखर उठता है।
- गन्ने का रस पीने से शरीर को ठण्डक मिलती है और खाना भी शीघ्र पचता है।
- गर्मी के दिनों में तली-भुनी चीजों से परहेज करना चाहिए। मिठाइयों का सेवन भी कम से कम करें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।
- खीरा, ककड़ी खाने के साथ- साथ इसका रस चेहरे पर लगाने से चेहरा निखर उठता है।
- नींबू युक्त पानी पीने से पेट के रोगों में आराम मिलता है।
- ग्रीष्म ऋतु में तरबूज शीतलता प्रदान करता है। इससे कब्ज भी दूर होती है और पसीना भी कम आता है।
- पसीने की दुर्गन्ध दूर करने के लिए शरीर की सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सूती अन्तर्वस्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।
- ग्रीष्म ऋतु में फलों के जूस का अधिकाधिक सेवन करना चाहिए। इससे शरीर की गर्मी दूर होती है और पेट की जलन शांत होती है।
- जलजीरा पीने से शरीर को ठण्डक मिलती है।
- ग्रीष्म ऋतु में चाय-कॉफी का कम से कम सेवन करना चाहिए। इसकी जगह लस्सी का सेवन करें शरीर मं ठण्डक व ताजगी बनी रहेगी।
- छाछ पीने से शरीर की शक्ति बढ़ती है और दस्त, पेचिश जैसे रोगों में लाभ होता है।
- भोजन में टमाटर, खीरा, ककड़ी आदि सलाद अवश्य लें।
- इस मौसम में अंगूर का सेवन करने से मूत्र बार -बार नहीं आता।
- सुबह-सवेरे नंगे पांव हरी घास पर चलने से आंखों की रोशनी तेज होती है और तलुओं की जलन शांत होती है।

–विजय रानी

चीनी लघु कथा

परस्पर सहयोग

श्रीमान ई पिछले कई वर्षों से साहित्य की दुनिया में संघर्षशील थे, पर आज तक उन्हें कोई प्रसिद्धि नहीं मिली। उन्होंने अपने सारे सम्पर्कों का लाभ उठाया, फिर भी शोहरत नहीं मिल पायी।

एक दिन उनकी मुलाकात प्रसिद्ध आलोचक च्यांग से हुई। उन्होंने च्यांग महोदय को अपने घर भोजन पर आमंत्रित किया।

श्रीमान ई की मेहमानवाजी से प्रसन्न होकर च्यांग ने कहा, 'आपकी बेकद्री अच्छी बात नहीं है। मैं आपके बारे में एक प्रशंसात्मक लेख लिखूंगा और उसे किसी प्रसिद्ध समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित करवाऊंगा। आपकी रचनाओं की तुलना...।'

आलोचक च्यांग की बात पूरी होने के पूर्व ही श्रीमान ई बोल उठे, 'कृपया आप मेरी रचनाओं की प्रशंसा न करें। मैं विनती करता हूं कि आप मेरी रचनाओं की आलोचना करें।

अपने पिछले दस वर्षों की जानकारी के आधार पर मैं कह सकता हूं कि आपने जिन कृतियों की आलोचना की है, वे देश-विदेश में प्रसिद्ध हुई हैं। इससे आपका मान भी बढ़ेगा और पैसे भी मिलेंगे। इसे ही परस्पर सहयोग कहते हैं।

–रत्नचंद 'रत्नेश'

बाल कहानी

पहचान

एक व्यक्ति धार्मिक प्रवृत्ति का था। भगवान की पूजा में काफी समय प्रतिदिन लगाता था। नियम से मंदिर भी जाता, सत्संग में भी जाता तथा घर में भी समय निकालकर भगवान का ध्यान लगाता। इसी कारण कभी कभी यह विचार भी उसके मन में आ जाता कि वह भगवान का परम भक्त है तथा भगवान अवश्य ही उसकी भक्ति से बहुत प्रसन्न होते होंगे। एक दिन वह कहीं सत्संग सुन रहा था तो स्वामी जी ने बताया कि कई लोग भक्ति से ऐसी शक्ति व प्रभु कृपा प्राप्त कर लेते हैं कि वे सीधे भगवान से बात करते हैं। भगवान की वाणी भी सुन सकते हैं तथा भगवान का स्पर्श भी कर सकते हैं। इसी से सम्बन्धित कई महापुरुषों के उदाहरण देकर भी उन्होंने भक्ति से प्राप्त शक्ति का विस्तृत वर्णन भी किया तथा कहा कि यदि कोई भी व्यक्ति इस तरह सच्ची भक्ति द्वारा ईश्वर को प्रसन्न कर लेता है तो उसमें सभी प्रकार की शक्ति स्वयं ही आ जाती है।

ऐसी बातें सुनकर उस धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति के मन में भी विचार आया कि वह भी इन्हीं महापुरुषों की तरह करके देखेगा कि भगवान उससे बात करते हैं या नहीं, उसे स्पर्श करते हैं या नहीं। यही सोचकर वह एकांत स्थान की तरफ चल पड़ा। काफी दूर पहुंच कर वह एक जगह रुक कर बोला, भगवान, मैं आपकी आवाज सुनना चाहता हूं। तभी एक चिड़िया चहकी लेकिन वह फिर बोला, प्रभु, मैं आपकी मीठी आवाज सुनना चाहता हूं। तभी एक कोयल की कूक गूंजने लगी। लेकिन फिर इस बार भी उसने उस पर कोई ध्यान न दिया तथा बोला, प्रभु, मुझे एक बार बस जोर से ऊंचे स्वर में पुकार दो। तभी बादल खूब गरजने लगे लेकिन उसने इस बार भी बादलों के गरजने पर कोई ध्यान न दिया तथा

● मुकेश विग

बोला, प्रभु, मैं एक बार आपके सुन्दर रूप में दर्शन करना चाहता हूं। क्या आप मुझे दर्शन नहीं देंगे? उसी समय एक सुंदर सा हिरण उस व्यक्ति के सामने आकर खड़ा हो गया लेकिन उसने हिरण की तरफ देखा तक नहीं।

अब वह कुछ कुछ निराश सा होने लगा तभी उसे स्वामी जी की बात का ध्यान आया कि भगवान कई बार अपने भक्तों की परीक्षा भी लेते हैं। यही सोच उसने एक बार फिर प्रभु को पुकार कर कहा, मैं आपके सुंदर रूप के दर्शन करना चाहता हूं। क्या मेरी पूजा भक्ति में कोई कमी है तभी बादलों में से चमकता सूरज बाहर निकला व हर तरफ प्रकाश फैल गया। इस बार भी उसी क्रम को दोहराते हुए उसने इस पर कोई ध्यान न दिया और आगे बढ़ गया। अब उसके मन में कई तरह के नकारात्मक विचार आने लगे फिर भी साहस करके उसने एक बार पुन: कहा, प्रभु मैं आपको स्पर्श करना चाहता हूं तभी अचानक उसका हाथ एक वृक्ष से छू गया लेकिन फिर भी वह थोड़ा गुस्से में बोला, यदि भगवान आप इस बार मुझे स्पर्श नहीं करेंगे तो मैं समझूंगा कि आपके मन में बिल्कुल दया-भावना नहीं है। आपका हृदय कठोर है व आप विशेष भक्तों को ही अपनी कृपा का पात्र समझते हैं। उसके इतना कहते ही एक सुंदर तितली उस के हाथ पर बैठ गई लेकिन वह उस तितली को उड़ाकर भगवान के प्रति क्रोध व्यक्त करने लगा।

वह गुस्से में बड़बड़ा रहा था कि तभी उसके कानों में एक आवाज सुनाई दी कि तू मुझे देखने या स्पर्श करने के योग्य ही नहीं है। मैंने हर बार तेरी बात का जवाब दिया लेकिन तू पहचान ही न सका जबकि मुझमें व प्रकृति की हर वस्तु, जीव में भेद करता है, वह मेरे असली रूप के दर्शन कभी नहीं कर सकता। हर जीव से प्रेम करो क्योंकि मैं मूर्तियों वाले रूप के बजाय किसी भी जीव के रूप में मिल सकता हूं।

लेख

दोस्तो! जुआनी सारेयां पर औंदी है। औंदी है तां मारोमार करदी। भई, पुच्छा मत। सीसे मूहरें खड़े होई कैं, अपणे आपे जो सुआरने दा बगत सबणां जो मिलदा है। अपणे आपे जो प्यार करणे दा मौका, हर कुसी जो मिलदा है। अपणे आपे पर मरणे दी बी इक उमर हुंदी है। दिल बटैं दिल लैणे-देणे दी इक उमर हुंदी है। दिल मूआ फिसलदा जरूर है। जली ऐत्थू जीभ बार-बार फिसलदी फिरदी है। ऐह् तां बचारा दिल है। क्या करे?

जुआनी

✍ रजनी कांत

दोस्तो! जुआनी सारेयां पर औंदी है। औंदी है तां मारोमार करदी। भई, पुच्छा मत। सीसे मूहरें खड़े होई कैं, अपणे आपे जो सुआरने दा बगत सबणां जो मिलदा है। अपणे आपे जो प्यार करणे दा मौका, हर कुसी जो मिलदा है। अपणे आपे पर मरणे दी बी इक उमर हुंदी है। दिल बटैं दिल लैणे-देणे दी इक उमर हुंदी है। दिल मूआ फिसलदा जरूर है। जली ऐत्थू जीभ बार-बार फिसलदी फिरदी है। ऐह् तां बचारा दिल है। क्या करे। आई बी जांदा। गलिया-गलिया धक्के खांदा बो फिरदा। सुंदर मूरतां जो हर कोई दिखणा चांहदा है। पूजना चांहदा है। सूरत दिखदा हर कोई। सीरत तां बड़ी दूरे दी गल्ल है। आखीं जलियां बड़ियां चंदरियां/ इतां-उताह् घुमदियां रैंह्दियां। पर बचारा दिल इसदा खमियाजा भुगतदा। रात-दिन जलदा, कोईला हुआ रैंह्दा।

जोबन तां मोई चीज़ है ऐसी, कि पुच्छा मत। किन्नीं ढकी करी रखणा? दुधे दा कटोरा होये तां ढकी लइये, पर जलेया जोबन किन्नां कि ढकी करी रखणा। हुण फसी मुशकैलटी। केइयां पर तां जली जुआनी रज्जीं कैं चढ़ियो हुंदी। पता नीं ठाकरें ओवरटैमें च छैल सूरता जो कढ़ेया होग। मेरा तां जाणें अगला म्हीणा। पुन्नेयां दे चंदे साईं मुखड़ा, दंद, चंबे दियां कलियां, नैणां च कजले दी धार। केइयां दी निंदर उड़ी जांदी। म्हारी बी केई बार उड्डी। क्या दस्सिये। लगदे हत्थ इक लोकगीते दिआं किच्छ बोल सुणी ल्यो।

दुधे दा कटोरा ढकी-ढकी रखनी,
जानी ढकी-ढकी रखनी
जोबन ढकेया नी जांदा।
फुल्ल सैः हुंदे तां तोड़ी-तोड़ी लांदी
ओ जोबन तोड़या नीं जांदा।

लाईये तां पैहनीं कैं गोरी जाह्ल अंगणे खड़ोंदी, भई पुच्छा मत, बिजल्ल लिसकदी गोरिया दे अंगे-अंगे चों हाखीं अम्बे दियां फाड़ियां लगदियां। लिब्बड़ रसभरी डालियां लगदियां। कुसी जो सैः मरूये दा फुल्ल लगा दी, कुस जो चंबेदी कली, सेंबल फुल्ल दाख लगा कर दी। जुआनी आई तां चाल बदली गेई। लच्छी चलदी तां धरत क्या गास्सा बी सौग्गी चलदा। मित्तरो! कयामत आई रैंह्दी। हिल्लण आई जांदा। अदा बी अप्पूं आई जांदी। सिरे ते लेई कैं पैरां तक अजब कशिश। हर कोई लाच्छियां कन्ने बोलणे दी कोशत करदा। **लच्छी बड़ी सूरतां वाली, मेरे कन्ने बोल लच्छिये।** बोलणे आस्ते, गल्ल-बात करणे आस्ते गुण बी तां अप्पूं च चाईदे। मखनबाजी दा ढंग बी चाईदा। झूठ-सच्च हर किच्छ बोलणा पौंदा। नीं तां अपणे घर बैठी रिहया। सुरमा पाणां तां नैण बी मटकाणा पौंदा जिस जो ऐह कला आई गई, सैः पास। नीं तां दूये फेल। ऐह् तां आई है मित्तरो। मक्खनबाजी दी कला दा इक नमूना दिखी लौः

हस्सयां ता तेरेयां फुल्ल झड़ी जांदे,
इणां हासियां ते सारे लोक मरदे।
हस्सेयां दे मुल्ल कुणी देणां गोरिये
छिन्न भर गल्ल सुणीं जायां गोरिये।

हाखीं चार होइयां, दिल बटोई रैः। नशाणियां दी अदला-बदली होई गेइयां। कुसी ने रूमाल दित्ता कुनी हत्थे दी मुंदी! इक-मिक्क होणे दियां कसमां खाई लइयां। चिट्टा कुर्ता सलवार वो कन्ने, लगेआ दिल नी मुड़दा, भावें बड्डी देवे तलवारी वो कन्ने। इरादे पक्के होई रैः। इकसी थालुये च खाणे दियां कसमां वी पक्कियां होई गेइयां। दिले दे टुकड़े जो कागद बनाणे आले, उंगलियां जो कटी कन्ने कालें बनाणे आले, आखीं दे कजले जो स्याही बनाणे आले घट्ट नीं। इक ढूंगगे तां दस्स मिलणे। मेले पर मिलणे दे वैदे होणां लग्गे। तिज्जो काली नजर न लग्गैः। काला-ढाटू, प्यारे हास्से, मोहली चाल कइयां जो लुटी लैंदी है। हाखीं इयां जियां धुहार लेइयां होण। तेरे सिरो पांधे लाल चुंदरी। तेरा पिच्छा निं छड्णा, चाहे चली जाये मेरी जिंदड़ी। जादा रा जोर बी दूई जो बन्नीं रखदा है। चिठ्ठियां दा अदान-प्रदान होणा लगी पौंदा। तेरे कोठे ते चिक्क सटणी।

दे दे मेरे कलम दवात, सजणां जो चिट्ठी, लिखणी। हाण तां जले मोबाइल चली पैः न। लगे रिह्या। जुआणी आई तां गोरिया दा मुल्ल पिआ। हासेयां तां तेरेयां फुल झड़ी जांदे। इणां हासेयां ते हन सारे लोक मरदे। हासेयां दा मुल्ल कुणी देणा गोरिये। अपूं दिंगे जिणां ठेका चुक्केया। संझो तुंहा जो क्या? पर इक गल्ल याद रखिये कि ऐह जुआनी सदा नीं रैहणी। ऐह् जुआनी ढली रैहणी। इयां मड़क न रखिये।

पींवली रा फुलट फुल्लो
एक्कि दिनो री जवानी
सदा न समजे इओ आपणी
एक्कि दिनो रा भलोई रे!

केई तां दहे झिल्ल कि बोला दे कि असें मरी करी वी पिच्छा न छडगे। केई बुढ़ापे च जुआणिया दे किस्से याद करी कैं रौंसा दे। या तां पल्ला न पकड़ा जे पकड़ो तां दूरे ताईं साथ दिया। नठ्ठो मत। केई तां नठणे आलेयां दा पता बी नी लगदा। पर केई तां मते पक्के। नियमां कन्नें असूला कन्ने बधयो।

सदा लोड़ी थी कौकड़ी होरी
फुल निवर फुलिए भर फुल्ली सोरी।
कीमती ए फलू न ढौकिदी
की लोड़ी पारे कै तोरी।

केई बोलदे बचपने दा पिआर रंग ल्योंदा है। जे दूये जणें सच्चे पक्के होण तां पिआर धुलदा फुलदा है सौण भादों ता हर साल ओणे पर जुआनी इक बारी गेई तां पिरी वापस नी औणी। ऐह गल्ल बी सच्ची है सोला आन्ने। गिआ पाणी वापस नीं औंदा। गई जुआनी मुड़ी करी नीं औंदी। पत्थरे पर लकीर है। सच्चे मितरां दी वी कोई कमी नीं। अलगरजी बी मते। निठुर प्रेमी छड्डी कैं चली जांदे। दिलां दे मेहरम मते घट्ट हुंदे न। जीभा दे मिठ्ठे कन्ने कपटी मने आले हजार मिली जांदे-

रगत थिआ भाउआ बगत पिआ
लागू थिये सभ कोई हो,
रगत मुका भाउआ बगत मुका
बात नी पुछदा कोई।

ओ चार दिहाड़ेयां दे जोबनूआं इक बार पिरी औः तां सही। तेरी मिन्नत बी होई। गल्ल मन्नी लैः म्हारी, तिज्जो इक बार अंजली भरी कैं पींगे। ठौकर बी गल्ल नीं सुनदा। बगते-बगते दी गल्ल है। बुढ़ापे च जुआणिया दे किस्से याद मते औंदे। असें तां ऐही ग्लाई सकदे-

हाये वो प्यारूआ जोबना हो,
अंजलुये भरी-भरी पीणा हो।

कबता

गलां

✍ शंकर सन्याल

छड़ चुगली मैंज़र तकरारे दियां गलां,
ओआ करी लेइए अप्पू चें प्यारे दियां गलां॥

सोची समझी के गल चाहिदी ए बोलणी,
गल बोलणे ते पहले चाहिदी ए तोलणी।
बाजी जितियो वी नीतां हारी जांदियां न गलां,
ओआ करी लेइए अप्पू चें प्यारे दियां गलां॥

गला लगिया च फुलंग नी होर पाई दी,
गल बोली करी गल होर नी वधाई दी॥
ऐहो डोवदियां कने ऐहो तारदियां गलां।
ओआ करी लेइए अप्पू चें प्यारे दियां गलां॥

गल मिठी होए काल़जुए ठंड पांदी ए,
गल कौड़ी आईयो दिलडुए फूकी जांदी ए,
माहणु मरदा नी माणुऐं जो मारदियां गलां,
ओआ करी लेइए अप्पू चें प्यारे दियां गलां॥

भरी-भरी करि ऊंदलां ने प्यार वंडी जा,
दिलां टुटियां जो प्यार पाई करी गंडी जा॥
'शंकर' भुली के न करेयां हंकार दियां गलां।
ओआ करी लेइए अप्पू चें प्यारे दियां गलां।

लेख

अति सब कैसी दी बुरी

✍ देसराज पुष्प

एह सौ फीसदी सच है कि अति कुसी वी चीजा दी खरी नी हुन्दी। एह मता नुकसान करदी। जादा करी क्या मिलणा? संतोख सबते बड़ी चीज है। गलान्दे हन, थोड़ा खाइए फिरी चुल्ही वल जाइए। माहणुए च बड़ी दौड़-भज लगियो। देखा-देखी सब कुछ होआ दी। पड़ोसियां वल कार है। पक्का मकान है। बड़े फणसोदे। क्याड़ियां उचियां करी निकलदे। असां क्या नीं करी सकदे? वहतेरी नौकरी है। लोन लेई लैहन्दे। पड़ौसियां ते बड्डा मकान बणाणा। कार वी इणां ते वदिया लैणी। पड़ौसिया दा घमण्ड तोड़ने तांई भारी लोन लोई लेया बैंके ते। भरदे भरदे नानी नजरी आई गेई। रटैर वी होई गे, लोन नीं भरोया। चिन्ता च सुकदे अध नी रेहया देहिया दा। बमारिया लगियां सै अलग। एहडे बड्डे घरे च कुण ठहराणा? पुत्र पढ़ी-लिखी नौकरिया लगी गे, ब्याहे करी लाड़ियां लेई तितर होई गे। बेटियां बगाने घरे चली गेइयां। घरे च जबरा-जबरी झूरदे। इत्थू अति होई गेई। खरा लोन लेया। खरा मकान पाया। खरे ब्याह कित्ते। अति खरा करने च मुक्के...परेशान होए। क्या फायदा? जमीन-जायदाद सब इत्थू रेही जाणे। क्या सोगी जांदा? पर माहणुए च संतोख होए ता। अति सबद ही बुरा है। शर्मा होरां रोज मिंजो मिलदे, गलांदे असां दा पड़ौसी माधो पटवारी है। कखां दा टपरू था। बुड़ैं पढ़ाई-लखाई ते लेई करी ब्याहे-बतरे तक सब कारज इसी टपरूए च कित्ते। बुड्डा मरी गेया ता माधो टपरू पुट्टी ता। पक्का मकान बणाणा भाई! बुड़ैं इसी टपरूए च उमर गजारी ती। माधो दिन रात इक करी ता। लोन लेणे दे हके च माधो नीं था। पटवारी होई करी तिस जो लोने दी क्या जरूरत? बहतेरे लोक ओंदे। रजिस्टरियां, जमीनां दे पर्चे ततीमे तांई। लगा मंगणा मुंह-मंगमा। लोक मजबूर, देई दिन्दे। माधो अति करी दित्तियो। केई गलांदे। इसजो सबक सखाणा चाईदा। इक माहणू विजिलेंस विभाग ने मिलया। माधो रिश्वत लैंहदा रंगे-हत्थो पकड़ोया। जेल होई नौकरी गेई। टब्बर रुला दा। कुण समझाए माहणु जो हांखी गां सब कुछ होआ दा। जिन्नीं नी समझणा तिस जो लख समझा। सै अपणिया हरकतां ते वाज नीं ओंदा। बोलदे हन- 'हम नहीं सुधरेंगे' ठीक है तुसां दी मर्जी! पर आखीर सौ सनयारे दी कनें लुहारे दी इक ही जोरदार चोट! सब कुछ बरबाद। सुधरने दा वक्त ताहलू चली जांदा। माहणू सिरे हत्थां रखी रोंदा।

शर्मा होरां इक घटना होर दसदे-असां दे गरांएं इक चेला है। सब तिसदे डरदे। लोक गलांदे। जेहड़ा तिसने पंगा लैंदा, तिसजो सै जादू-टोने ने मारी देन्दा। सै बी इसा गल्ला सरेआम गलांदा। लोक वैहमें च फसयो। जे जादुए ने कोई कुसी जो मारी दे तां गरांएं दे गरां खिल्ले पेई जाणे। माहणुए च अप्पू च प्रेम-प्यार घटी गेया। हिरख-वरोध वधी गेया। सारया चलंगी सिखी ने, तांत्रिक-जादूगर बणी ने अपणे वरोधी मारी देणे थे। आदमी अपणी मौत मरदा। कोई कुसीजो नीं मारदा। विधि दे विधान दे अग्गे माहणुए दी कोई विसात नीं। दुनियां च क्या कुछ होआ दा। इस दा लेखा-जोखा धर्मराजे वल है। सै ही माहणुए जो स्वासां दा हसाब-कताब पूरा होणे परन्त अप्पू वल सद्दी लैंहदा कनें कर्मां दे मुताबक दूबारा जन्म दिन्दा। असां दे धर्मग्रन्थ इसा सच्चाइया ने भरोयो। हां तां गल्ल लगियो थी चेले दी। तिन्नी वी अति करी ती। तिन्नी सोचया मैं जादू टोने कने पूरिया दुनिया च राज करना। सै सारेयां जो ओपरा-सोपरा जादू-टोना करदा रैहन्दा। कोई अपणी मौत वी मरदा तां सै सोचदा मेरे जादुए ने मरया। थोड़ेयां दिनां च तिन्नी नौंआ कम्म शुरू करी दित्तेया था। सै सारी रात शमशान घाटे अराधना करदा। भयागा दपैहर घरे हटी औंदा। इक दिन शमशान घाटे च तिसदी लाश मिल्ली। लोकां जो मारने दे दावे करने आला खुद मरी गेया।

हर कोई सोचदा असां वल खूब-सारी धन-दौलत होए। धन कमाणे दी लालसा इतनी वधी जांदी कि तिसजो खरे-बुरे दी होश नीं रैहन्दी। हाय पैसा! हाय पैसा!! करदा सै इसजो हासिल करने तांई अति करी दिन्दा। जिस वल हजारां हन सै लखां दे सुफणे लैंदा, लखां वाला करोड़ां बणाणे दी सोचदा। करोड़ा बाला अरबां। जिस बल साइकल है सै कार-स्कूटर खरीदणे दी सोचदा। कारां वाला सोचदा सै हवा च उडारिया मारे। तिसदी नजर गास हवाई जहाजां जो उडदी दिखदी। मन कुसी दा निचला नीं वैहंदा। मन अति कराई दिन्दा। एह अति माहणुए जो मारी मुकाई दिन्दी, जेला दी हवा खुआन्दी, माहणुए दा बसा-बसाया घर बरबाद होई जांदा।

अजकले दे छोरू-छोकरू फिल्मी स्टाइल नैं प्रेम-प्यार करदे। कुसी कुड़िया हसी ने गल क्या करी दित्ती तिसा दे पिच्छे लगी जाणा। हुण माहणू सब कुछ फटाफट करना चाहन्दा। रातों-रात करोड़पति बणना चाहंदा। भौएं नतीजा कुछ वी होए। छोरूआं-छोकरियां दा प्रेम-प्यार वी फटाफट हुन्दा, फटाफद टुटी वी जान्दा। मियो हाली पढ़ी ता लिया, अण्णे पैरां खड़ोई तालिया फिरी शादी-ब्याहे दी सोचा। पर नीं...प्रेम होई गिया..घरे आले नां करदे-मरने-मारने दियां धमकिया...। कहणे दा मतलब ऐ कि घमण्ड कुसी वी किसमां दा खरा नीं। अति गलाणा, अति चुप रैहणा, अति खाणा, अति भुखे रैहणा, अति अमीरी, अति गरीबी, अति पढ़ाई, अति गंवार या अनपढ़ता, अति सोणा, अति जागणा, अति प्रेम, अति नफरत, अति घमंड, अति सादगी, अति दानी, अति क्रोध, अति शांति, अति उदास रैहणा, अति कामी, अति सदाचारी, अति, अति, अति... यानि कर्म करदे जित्थू अति होई तिथू नुकसान होणा ई होणा। माहणू खुद अनुभव करी दिक्खी लै। फिरी कजो करनीं अति। ठण्डा करी खाओ। गर्म खाई कजो जीहव फुकणी। कुथी मैं वी तुसां जो अति ता नीं गलाई बैठा। अच्छा रुकदा अति नीं होई जाए कुथी...।

स्वास्थ्य सेवाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता

स्वास्थ्य विभाग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में बताया कि राज्य सरकार प्रदेश के सभी क्षेत्रों में लोगों को उनके घर-द्वार पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के प्रति वचनबद्ध है तथा इस दिशा में सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए, राज्य सरकार रोगी कल्याण समितियों के माध्यम से चिकित्सकों और पैरा मेडिकल कर्मचारियों की भर्ती कर रही है ताकि प्रदेश के उन सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भी, जहां नागरिकों को स्टाफ की कमी के कारण पहले सुचारू स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पा रही थी, में भी श्रेष्ठ स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हों।

प्रवक्ता ने कहा कि चिकित्सकों को भर्ती के लिए अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है और उन्हें श्रेणियों के अनुसार ही नियमित तौर पर मिलने वाले वेतन के अतिरिक्त क्रमशः 9000, 6000 और 3000 रुपये अतिरिक्त प्रोत्साहन भत्ते के रूप में प्रतिमाह दिए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के युवा चिकित्सकों को उच्च शिक्षण के लिए भी बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवा रही है। उच्च शिक्षण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, प्रदेश में चिकित्सा शिक्षा में स्नातकोत्तर करने के लिए आरक्षण का प्रावधान बढ़ाया गया है। इस नीति के तहत वर्ष 2010 में 70 प्रतिशत आरक्षण, वर्ष 2011 में 80 प्रतिशत आरक्षण और वर्ष 2012 में 90 एवं 95 प्रतिशत तक स्नातकोत्तर सीटों में आरक्षण का प्रावधान किया गया है।

उन्होंने कहा कि आरक्षण की यह सुविधा अनुबंध आधार पर तथा रोगी कल्याण समितियों के माध्यम से नियुक्त सभी चिकित्सकों को उपलब्ध करवाई गई है। राज्य सरकार ने स्नातकोत्तर की सीटों की संख्या को 38 से बढ़ाकर 75 किया है।

प्रवक्ता ने कहा कि राज्य सरकार चिकित्सकों के भविष्य को सुनिश्चित बनाने को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है और हाल ही में राज्य मंत्रिमण्डल ने यह निर्णय लिया है कि चिकित्सकों को छः वर्ष के कार्यकाल के उपरान्त नियमित किया जाए, जबकि अनुबंध आधार पर नियुक्त राज्य सरकार के अन्य कर्मचारियों और अधिकारियों को आठ वर्ष के कार्यकाल के उपरान्त नियमित करने का प्रावधान है।

प्रवक्ता ने कुछ समाचार पत्रों में इस आशय के समाचार को पूर्णतः निराधार और सत्य से परे बताया है, जिसमें कहा गया है कि मंत्रिमण्डल का निर्णय रोगी कल्याण समितियों और अनुबंध आधार पर नियुक्त चिकित्सकों के हकों के विरुद्ध है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के चिकित्सकों और जनता के हितों को सर्वोच्च स्थान देती है और उनके हित संवर्धन एवं समस्याओं के निराकरण को सदैव अधिमान दिया जाता है।

रोहतांग सुरंग का शिलान्यास

(पृष्ठ एक का शेष) विशेषकर जनजातीय क्षेत्र लाहौल व पांगी के लोगों का यह एक बड़ा सपना है। श्री वाजपेयी ने अपने प्रधानमंत्रित्वकाल के दौरान प्रदेश को यह तोहफा दिया था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह परियोजना सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे रक्षा सामग्री व लोगों को लद्दाख क्षेत्र की सीमाओं तक पहुंचाने की सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि 9 कि.मी. लंबी इस सुरंग से न केवल 50 कि.मी. की दूरी कम होगी, बल्कि सर्दी के मौसम के दौरान लाहौल व पांगी घाटियां भी खुली रहेंगी। साथ ही इसके बनने से जनजातीय क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस सुरंग के बनने से लद्दाख क्षेत्र भी अधिक समय तक खुला रहेगा। उन्होंने कहा कि इस सुरंग का कार्य वर्ष 2015 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसके लिए आधुनिक सुरंग निर्माण तकनीक से युद्ध स्तर पर कार्य किया जाएगा।

राज्य में खेल पर्यटन को बढ़ावा

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा है कि राज्य सरकार प्रदेश में खेल पर्यटन को विशेष बढ़ावा दे रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में खेल पर्यटन के क्षेत्र में गोल्फ की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्य मंत्री गत दिनों शिमला में विश्व विख्यात नालदेहरा गोल्फ कोर्स में एक दिवसीय 'कार्ल्सबर्ग गोल्फ टूर्नामेंट' के पुरस्कार वितरण समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्य मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में सभी स्तरों पर खेल अधोसरंचना सुविधाओं को सुदृढ़ कर रही है ताकि प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों को और बढ़ावा दिया जा सके।

उन्होंने कहा कि नालदेहरा गोल्फ कोर्स देश में सबसे पुराना और सबसे उपयुक्त जगह पर स्थित गोल्फ कोर्स है, जहां विश्व भर के श्रेष्ठ गोल्फर वर्ष भर आते रहते हैं।

प्रो. धूमल ने प्रतियोगिता के विजेताओं को बधाई देते हुए उनके सुखद भविष्य की कामना की। उन्होंने लगातार दूसरे वर्ष इस प्रतियोगिता को आयोजित करने के लिए कार्ल्सबर्ग समूह की भी सराहना की।

जैविक खेती से पुनर्जीवित...

(पृष्ठ एक का शेष)जा सकते हैं। इन संभावित क्षेत्रों में विशेषज्ञों का एक दल सर्वेक्षण कर संभावनाओं का पता लगाएगा, जिससे प्राथमिकता के आधार पर चाय उत्पादन आरम्भ किया जा सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में केवल 8.5 लाख किलोग्राम चाय का उत्पादन वार्षिक आधार पर हो रहा है, जिसे 25 लाख किलोग्राम तक बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। प्रदेश में चाय पत्ती का उत्पादन बढ़ाकर ही कांगड़ा चाय के ब्रांड नेम को लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

केंद्रीय वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री ऐ.के. मंगोतरा ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में चाय उद्योग को पुनर्जीवित करने के लिए केंद्र सरकार विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करेगी और कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में एक जैविक चाय बागान स्थापित करेगी। उन्होंने विश्वास दिलाया कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कांगड़ा चाय के विपणन के लिए देश के विख्यात चाय व्यापारी इस योजना के साथ जोड़े जाएंगे। उन्होंने कहा कि विश्व की विख्यात विदेशी कंपनियां हिमाचल प्रदेश में निवेश करने की इच्छुक हैं। उन्होंने बताया कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री द्वारा हाल ही में घोषित स्पाईस पार्क शीघ्र ही 27 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जाएगा, जहां अदरक, लहसुन और मिर्च इत्यादि को प्रोसेस किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आरम्भ में इसके साथ स्थानीय व्यापारियों को जोड़ा जाएगा और यह राज्य के कृषि विश्वविद्यालय के साथ केंद्रीय मंत्रालय का एक संयुक्त उद्यम होगा। दूसरे चरण में अदरक तथा लहसुन इत्यादि की आपूर्ति के लिए शिमला तथा सिरमौर जिलों को भी इसके साथ जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि इस पार्क के स्थापित होने से राज्य में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।

सचिव कृषि श्री राम सुभग सिंह ने इस अवसर पर प्रदेश में चाय उद्योग की स्थिति पर विस्तृत जानकारी और इसे पुनर्जीवित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जैविक चाय खेती के लाभ के बारे में चाय उत्पादकों को शिक्षित किया जाना आवश्यक है और यह कार्य भारतीय टी बोर्ड के विशेषज्ञों के सहयोग से पूरा किया जा सकता है।

'हर गांव की कहानी'

(पृष्ठ एक का शेष)के लिए 4 करोड़ रुपये और सुंदरनगर डेस्टिनेशन योजना के लिए केन्द्र सरकार द्वारा 4.75 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इन योजनाओं पर अच्छा कार्य कर रही है। राज्य सरकार द्वारा केन्द्र सरकार को कुल्लू-मनाली तथा यमुनानगर-पंचकुला-पांवटा साहिब पर्यटन सर्किट का प्रस्ताव केन्द्र सरकार के विचाराधीन है।

इससे पूर्व, कुमारी शैलजा ने प्राचीन महावीर मंदिर खुशाला परिसर में 25 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले पार्क की आधारशिला भी रखी।

परिवहन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने केन्द्रीय मंत्री से आग्रह किया कि प्रदेश के पर्यटन संभावित क्षेत्रों के विकास के लिए उदार वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाएं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियां अन्य राज्यों से अलग हैं और यहां सड़क सुविधा प्रदान करना मुश्किल कार्य है। विधायक श्री सोहनलाल ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे।

प्रधान सचिव पर्यटन श्रीमती मनीषा नंदा ने कहा कि हर गांव की कहानी योजना को मनरेगा के साथ जोड़ा जाएगा, ताकि गांव के लोग इस का लाभ उठा सकें।

विधायक एवं राज्य विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री गंगूराम मुसाफिर, राज्य पर्यटन विकास निगम के प्रबन्ध निदेशक श्री सुभाशीष पाण्डा और निदेशक पर्यटन डॉ. अरुण शर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्रदेश सरकार की पर्यटन से जुड़ी दीर्घकालीन योजनाओं में केन्द्र बनेगा सहायक

इससे पूर्व, केन्द्रीय पर्यटन, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्री कुमारी शैलजा ने पर्यटन विभाग द्वारा कंडाघाट के होटल डेस्टिनेशन में आयोजित 'हिमाचल हाट' मेले का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में पर्यटन विकास की असीमित संभावनाएं हैं और अभी भी ऐसे अनछुए क्षेत्र हैं, जहां पर्यटन का विकास किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार प्रदेश सरकार के पर्यटन के विस्तार को लेकर बनाई जा रही दीर्घकालीन योजनाओं में हर संभव सहायता और प्रोत्साहन देगी।

उन्होंने कहा कि हिमाचल हाट मेला सरकारी तथा निजी भागीदारी का ऐसा उद्यम है, जिससे सरकारी तथा निजी क्षेत्र के कुशल प्रबन्धन का लाभ उठाकर पर्यटन को और प्रोत्साहित किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार देश में देशी और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए अनेक योजनाओं पर कार्य कर रही है ताकि देश के प्रत्येक भाग में देशी व विदेशी पर्यटक पहुंच सकें और यहां प्रकृति का आनंद उठा सकें।

इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव बिंदल, परिवहन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर, विधायक विद्या स्टोक्स, विधायक श्री गंगूराम मुसाफिर तथा विधायक श्री सुखविन्द्र सुक्खु भी उपस्थित थे।

चाय पौधरोपण के अंतर्गत क्षेत्र...

(पृष्ठ एक का शेष)हेक्टेयर भूमि को पुनर्जीवित करेगी, जिससे 2.5 मिलियन कि.ग्रा. चाय का उत्पादन प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में राज्य में लगभग 1000 हेक्टेयर भूमि पर चाय पत्ती की खेती की जा रही है और चाय पत्ती का कुल उत्पादन लगभग 8 लाख कि.ग्रा. है। जिन चाय बागानों में उचित मात्रा में खाद का प्रयोग किया जाता है, वहां प्रति हेक्टेयर चाय पत्ती उत्पादन 2000 कि.ग्रा. है। इस उत्पादन को उचित खाद की मात्रा से बढ़ाकर 1.5 मिलियन कि.ग्रा. किया जा सकता है।

मुख्य सचिव ने कहा कि कांगड़ा चाय की खेती के अधीन क्षेत्र को बढ़ाने से पूर्व कुछ जिलों में सर्वेक्षण किया जाएगा।

मुख्य सचिव ने कृषि विभाग तथा कृषि विश्वविद्यालय को निर्देश दिए कि वे स्पाइस बोर्ड के अधिकारियों के साथ हमीरपुर जिला के बड़ा क्षेत्र का दौरा करें, ताकि वहां स्पाइस पार्क की संभावनाओं का पता लगाया जा सके।

सचिव कृषि श्री रामसुभग सिंह ने कहा कि प्रदेश में बेकार पड़े चाय पत्ती उत्पादन क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के लिए उपयुक्त उद्यमी चयनित किए जाएंगे, ताकि वे स्थानीय किसानों के साथ सहभागिता में पौधरोपण कंपनियां स्थापित कर सकें।

चाय उत्पादन क्षेत्र को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि इसमें गुणवत्ता का ध्यान रखा जाना चाहिए, ताकि किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिल सके।

इस अवसर पर टी-बोर्ड के अधिकारियों द्वारा एक प्रस्तुतिकरण दिया गया।

चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के उप कुलपति डॉ. तेज प्रताप सिंह ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा चाय को पुनर्जीवित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी।

केन्द्रीय वाणिज्य विभाग में अतिरिक्त सचिव श्री अशोक के. मंगोत्रा, अतिरिक्त मुख्य सचिव सुश्री हरीन्द्र हीरा, हमीरपुर और शिमला जिलों के उपायुक्त, टी-बोर्ड के कृषि तथा बागबानी प्रतिनिधि, भारतीय चाय संघ, चाय उद्योग के प्रतिनिधि, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी बैठक में उपस्थित थे।

सामुदायिक भागीदारी से...

(पृष्ठ एक का शेष)वैश्विक उष्मीकरण के कारण भावी पीढ़ियों के लिए पानी की उपलब्धता घटती जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में जलापूर्ति के प्रबंधन पर नज़र रखने और पारम्परिक जल स्रोतों का रख-रखाव सुनिश्चित बनाने के लिए राज्य सरकार ने जल प्रबंधन बोर्ड गठित किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सभी पहलुओं पर गौर करने के बाद राज्य की एक नदी को राज्य नदी घोषित करने पर विचार कर रही है। उन्होंने कहा कि श्री राजेंद्र सिंह द्वारा दिए गए सुझावों का राज्य सरकार स्वागत करती है और जल संरक्षण के लिए इन सुझावों पर अमल किया जाएगा। प्रधान सचिव सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य श्री नरेंद्र चौहान ने मुख्यमंत्री तथा श्री राजेंद्र सिंह का स्वागत किया और जल प्रबंधन बोर्ड का मार्गदर्शन करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप, प्रधान सचिव, सचिव, विभागाध्यक्ष, जल प्रबंधन बोर्ड के गैर-सरकारी सदस्य और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने बैठक में भाग लिया।

ऐतिहासिक गांव पर्यटन की दृष्टि से विकसित होंगे

(पृष्ठ एक का शेष)कहा कि पर्यटन क्षेत्र के विविधिकरण तथा राज्य में पर्यटकों के लंबे ठहराव को सुनिश्चित बनाया जा रहा है। जिला स्तर पर संबंधित उपायुक्तों की अध्यक्षता में समितियां गठित की गयी हैं। हिमाचल प्रदेश, देश का ऐसा पहला राज्य होगा, जहां मनरेगा को पर्यटन विकास गतिविधियों से जोड़ा गया है।

प्रो. धूमल ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र राज्य के प्रमुख उद्योग के रूप में उभर रहा है, जिसमें रोजगार एवं स्वरोजगार की व्यापक संभावनाएं है। प्रकृति ने राज्य को अपार सौंदर्य प्रदान किया है, जिसके सुनियोजित एवं पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिगत व्यापक दोहन से ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़ किया जा रहा है ताकि जिससे लोगों को उनके घर-द्वार पर रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य में विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के लिए उनके पसंदीदा, लोकप्रिय एवं सुरक्षित पर्यटक स्थल मौजूद हैं, जो राज्य की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में सहायक हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में पर्यटन विकास गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे, ताकि यह क्षेत्र रोजगार एवं स्वरोजगार सृजन का प्रमुख स्रोत बन कर उभर सके। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री से राज्य में पर्यटन परियोजनाओं के लिए उदार वित्तीय सहायता प्रदान करने आग्रह किया। केन्द्रीय पर्यटन, आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्री कुमारी शैलजा ने प्रदेश में कार्यान्वित की जा रही पर्यटन विकास गतिविधियों में गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि इससे राज्य में पर्यटन गतिविधियों में नयी गति प्रदान करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा कार्यान्वित की जा रही पर्यटन विकास प्रोत्साहनों जैसे हर गांव की कहानी, हर घर कुछ कहता है तथा होम स्टे योजनाओं की सराहना की।

निदेशक, पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन डॉ. अरुण शर्मा ने केन्द्रीय मंत्री को पर्यटन विकास गतिविधियों के विविधिकरण की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अभी तक राज्य में 246 होम स्टे इकाइयां पंजीकृत की गयी हैं तथा और आवेदनों पर प्रक्रिया जारी है। उन्होंने कहा कि हर गांव की कहानी भी एक विशेष प्रोत्साहन योजना है क्योंकि राज्य के कई गांव किसी न किसी ऐतिहासिक घटना से जुड़े हैं।

परिवहन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह, राज्यसभा सांसद श्रीमती बिमला कश्यप, विधायक श्री जी.आर. मुसाफिर, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री भीमसेन, प्रधान सचिव पर्यटन श्रीमती मनीषा नंदा, हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के प्रबंध निदेशक श्री सुभाशीष पाण्डा, संयुक्त निदेशक पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन डॉ. मनोज शर्मा तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

खाद पर बढ़ी कीमत

(पृष्ठ एक का शेष)अनुदान दरों पर खंड स्तर के गोदामों तक खाद पहुंचाने के लिए हिचकिचा रही हैं। इसलिए प्रदेश सरकार ने निर्णय लिया है कि जब तक केंद्र सरकार राज्य की मांग के अनुरूप मालभाड़ा अनुदान में संशोधन नहीं करती, वह स्वयं अंतरीय भाड़े को वहन करेगी। प्रो. धूमल ने कहा कि कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियां प्रदेश के लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन है, इसलिए प्रदेश सरकार इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को विशेष प्राथमिकता प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि फसलों के विविधिकरण को प्रोत्साहित करने के लिए 372 करोड़ रुपये की योजना तैयार की गयी है, जिसमें जैविक खेती व जलसंग्रहण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिससे किसानों की आर्थिकी में और सुधार आएगा।

प्राचीन भारतीय लिपियां

(पृष्ठ 6 का शेष) **ग्रंथ लिपि** : तमिलनाडु के आरकट सलेम, चित्रनापल्ली, मदुरै तथा पुराने त्रावन कोर राज्य में सातवीं शताब्दी से इस लिपि का व्यवहार होता रहा है। दक्षिण के पाण्डय, पतलव तथा चोल राजाओं ने अपने अभिलेखों में इस लिपि का प्रयोग किया है। इस लिपि को पल्लव ग्रन्थ लिपि का नाम दिया गया है। राज सिंह का कैलाश नाथ मंदिर का शिलालेख सातवीं शताब्दी की पल्लव ग्रंथ लिपि का अद्वितीय उदाहरण है।

मलयालम लिपि : अनेक विद्वानों का मत है कि इस लिपि का जन्म ग्रन्थ लिपि से हुआ है। इस लिपि में ग्रन्थ लिपि का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

तेलुगू-कन्नड़ लिपि : दोनों लिपियों का उद्गम एक साथ हुआ है। इन लिपियों का प्रयोग दक्षिणी महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश के कुछ जिलों तथा मद्रास में होता है। इस लिपि का रूप आरम्भिक चालुक्य अभिलेखों में देखने को मिलता है। इस लिपि को 5वीं शताब्दी का माना जाता है। 13वीं शताब्दी में कन्नड़ और तेलुगू लिपि का अलग-अलग विकास हुआ। **मोड़ी लिपि** : इस लिपि का निर्माण यादव राजाओं के मंत्री हेमाद्रि ने किया था। इस लिपि को शीघ्रता से लिखा जाता है। जिससे लिपि के अक्षरों में तोड़-मरोड़ आ जाती थी इसलिए इस लिपि को मोड़ी लिपि का नाम दिया गया है। शिवाजी तथा पेशवाओं के शासनकाल में इस लिपि का प्रचलन था।

बंगला लिपि : बंगला और असमिया लिपि में बहुत समानता है। इन दोनों लिपियों का विकास एक साथ हुआ। बंगाल में 12वीं शताब्दी के लेखों में बंगला लिपि देखने में आई है। 13वीं शताब्दी के बाद बंगला लिपि के ताम्रपत्रों, प्रस्तरों और विविध प्रकार के कागजों पर बहुत से अभिलेख मिलते हैं।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल 'शिमला ग्रीष्मोत्सव' के शुभारम्भ अवसर पर स्मारिका का विमोचन करते हुए। साथ हैं हि.प्र. विधानसभा अध्यक्ष श्री तुलसी राम व बागबानी मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा।

स्थानीय निकाय आयोजित करेंगे जिला स्तरीय मेले एवं त्योहार

प्रदेश में जिला स्तरीय मेलों एवं त्योहारों का आयोजन अब स्थानीय निकायों द्वारा किया जाएगा। यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों सोलन जिले के परवाणु में धौलाधार मित्र सभा द्वारा आयोजित 'परिवार मित्र मिलन समारोह' को संबोधित करते हुए दी। इससे पूर्व उन्होंने धौलाधार भवन का शिलान्यास भी किया।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार जिला परिषद, नगर निगम, नगर परिषदों, नगर पंचायतों और ग्राम पंचायतों को जिला स्तरीय मेलों और त्योहारों को आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करेगी, ताकि संबंधित क्षेत्र के रीति रिवाजों एवं परंपराओं को बढ़ावा मिल सके। उन्होंने कहा कि स्थानीय प्रशासन आयोजकों के लिए कानून व्यवस्था की सुविधा प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि स्थानीय लोक कलाकारों को सांस्कृतिक संध्याओं में अवसर प्रदान किए जाने से लोगों और लोक कलाकारों के हितों की रक्षा होगी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि परवाणु स्थित ई.एस.आई अस्पताल को सुदृढ़ किया जाएगा ताकि क्षेत्र के लोगों व औद्योगिक श्रमिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। रोगियों की सुविधा के लिए इस अस्पताल को एक और एम्बुलेंस सुविधा प्रदान की जाएगी। उन्होंने राजकीय उच्च विद्यालय पट्टा मसूलखाना के भवन के लिए 5 लाख रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि ई.एस.आई. अस्पताल के समीप एक नये बस अड्डे का निर्माण भी किया जायेगा।

प्रो. धूमल ने परवाणु में धौलाधार भवन के निर्माण के लिए धौलाधार मित्र सभा को लोकसभा सांसद श्री वीरेन्द्र कश्यप एवं राज्यसभा सांसद श्रीमती बिमला कश्यप की सांसद निधि से 5-5 लाख रुपये तथा क्षेत्रीय विधायक विकास निधि से 2 लाख रुपये देने की घोषणा की।

उन्होंने जंगेशु में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन के निर्माण के लिए 25 लाख रुपये देने की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय लोगों और स्थानीय उद्यमियों की राजस्व संबंधी सेवाओं की मांगों के दृष्टिगत नायब तहसीलदार, कसौली प्रत्येक माह पहली से 15 तारीख तक परवाणु में मौजूद रहेंगे।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव बिन्दल ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र प्रदेश सरकार की प्राथमिकता है, जिसे सभी स्तरों पर सुदृढ़ किया जा रहा है। स्थानीय विधायक डॉ. राजीव सेजल ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया।

धौलाधार मित्र सभा के अध्यक्ष श्री मूलराज शर्मा तथा सभा के चेयरमैन श्री एन.एन. वालिया ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये। पूर्व विधायक श्री सतपाल कंबोज भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

ठोस व तरल कचरे के लिए विशेष योजना शीघ्र

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री जयराम ठाकुर ने कहा कि सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम के कार्यान्वयन में हिमाचल प्रदेश, देश का अग्रणी राज्य बना है और शीघ्र ही राज्य शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने जा रहा है। उन्होंने कहा कि ठोस एवं तरल कचरे के प्रबंधन के लिए प्रदेश एक विशेष योजना बनाने जा रहा है जिस पर इसी वर्ष कार्य आरंभ होगा।

श्री जयराम ठाकुर गत दिनों ग्रामीण विकास विभाग द्वारा ठोस एवं तरल कचरे के प्रबंधन के लिए विश्व बैंक के जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम के सौजन्य से आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारम्भ करने के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने विश्व बैंक से जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश को सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान में सहयोग देने का आग्रह किया था। इसी

92 प्रतिशत घरों में शौचालय निर्मित

कड़ी में शिमला में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के तहत ठोस एवं तरल कचरे का प्रबंधन घटक भी शामिल है।

ग्रामीण विकास मंत्री ने कहा कि सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के कार्यान्वयन में हिमाचल प्रदेश देश के अन्य राज्यों से अग्रणी है। वर्ष 2008 में जहां केवल 42 प्रतिशत घरों में शौचालयों का निर्माण हुआ था वहीं पिछले दो वर्षों में इस अभियान के अंतर्गत तेजी से किए गए कार्य के परिणामस्वरूप अब तक 92 प्रतिशत घरों में शौचालय बन चुके हैं।

उन्होंने कहा कि शीघ्र ही प्रदेश शत-प्रतिशत शौचालय निर्माण का लक्ष्य प्राप्त करने जा रहा है। इस कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वयन की वजह से कई राज्यों के प्रतिनिधि यहां अध्ययन के लिए आ रहे हैं।

विश्व बैंक के जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम के राज्य समन्वयक श्री अजीत कुमार और राष्ट्रीय स्तर के कई अन्य विशेषज्ञों ने इस अवसर पर ठोस एवं तरल कचरे के प्रबन्धन को लेकर अपनी प्रस्तुति दी।

सड़क मार्ग से जुड़े 846 नये गांव

लोक निर्माण मंत्री श्री गुलाब सिंह ठाकुर ने कहा कि सड़कों के निर्माण एवं रख-रखाव को प्रदेश सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान मार्च, 2010 तक 2498 कि.मी. वाहन योग्य सड़कों का निर्माण किया गया। उन्होंने कहा कि 1934 कि.मी. सड़कों की मैटलिंग व टॉरिंग की गयी है तथा 846 नए गांवों को सड़क सुविधा से जोड़ा गया है। यह जानकारी श्री ठाकुर ने गत दिनों शिमला में दी। उन्होंने बताया कि प्रदेश में प्रतिस्पर्धात्मक दरों पर गुणात्मक तारकोल (बिटुमन) का प्राप्ण सुनिश्चित बनाने के लिए एक तकनीकी कमेटी का गठन किया गया है। यह कमेटी बिटुमन प्राप्ण के लिए कड़ गुणात्मक मापदण्ड निर्धारित करेगी। उन्होंने कहा कि बिटुमन के गुणात्मक विपणन के उद्देश्य से इस कमेटी का गठन किया गया है।

पांच हजार बस्तियों को मिलेगी पेयजल सुविधा

प्रदेश में इस वित्त वर्ष के दौरान 5000 बस्तियों को 370 करोड़ रुपये व्यय कर पेयजल सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। यह जानकारी मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने गत दिनों शिमला में राज्य जल एवं स्वच्छता मिशन की उच्च स्तरीय समिति की 16वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए दी। मुख्य सचिव ने कहा कि जलमणि कार्यक्रम के अंतर्गत इस वर्ष 2370 स्कूलों को लाया जाएगा, जिस पर 4.70 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि राज्य में वर्ष 2005 से 2009-10 के दौरान स्वजलधारा योजना के तहत 1763 योजनाओं को स्वीकृत किया गया, जिसमें से 1377 योजनाओं का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा 386 का कार्य प्रगति पर है। प्रधान सचिव, सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य श्री नरेन्द्र चौहान ने विभाग द्वारा आरंभ की गई विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।

चिकित्सकों के हित में प्रदेश सरकार ने उठाये महत्वपूर्ण कदम

प्रदेश सरकार स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए प्रयासरत है। प्रदेश में प्रो. प्रेम कुमार धूमल के नेतृत्व वाली सरकार ने सत्ता में आते ही एम.बी.बी.एस. चिकित्सकों की सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए अनेक पग उठाए हैं। यह जानकारी स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. राजीव बिंदल ने गत दिनों शिमला में दी। उन्होंने कहा कि

वर्तमान सरकार के कार्यकाल में एमडी/एमएस की सीटें 38 से बढ़ाकर 75 हुई

वर्ष 2008 से पहले लगाए गए अनुबन्ध चिकित्सकों को 16,000 रुपये मासिक वेतन दिया जा रहा था, जिसे वर्तमान सरकार ने बढ़ाकर 26,500 रुपये मासिक किया और साथ ही 3,000 रुपये, 6,000 रुपये और 9,000 रुपये प्रोत्साहन राशि उपलब्ध करवायी गई। इसी प्रकार विशेषज्ञ चिकित्सकों को पिछली सरकार में 25,000 रुपये वेतन दिया जा रहा था, जिसे बढ़ाकर 45,000 रुपये किया गया व प्रोत्साहन राशि भी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि पूर्व सरकार के कार्यकाल में प्रदेश में केवल 38 सीटें एम.डी./एम.एस. की थी, जिन्हें बढ़ाकर 75 किया गया और इन सीटों में प्रदेश में कार्यरत चिकित्सकों को आरक्षण प्रति वर्ष बढ़ाते हुए 95 प्रतिशत तक करने का निर्णय लिया गया है। इस प्रकार वर्षों से जो चिकित्सक एम.डी/एम.एस करने के लिए प्रयासरत थे, उनके लिए नये साधन उपलब्ध हुए।

डॉ. बिन्दल ने कहा कि रोगी कल्याण समितियों के माध्यम से लगाये गये चिकित्सकों के मन में किसी प्रकार की शंका न रहे, इसी के दृष्टिगत 3 वर्ष के बाद इन्हें अनुबन्ध पर और 6 वर्ष बाद नियमित करने का फैसला लिया गया, जबकि पूर्व में केवल 8 वर्ष का कार्यकाल अनुबन्ध के रूप में पूर्ण करने पर नियमित करने का प्रावधान था। उन्होंने कहा कि इस नीति के अंतर्गत केवल चिकित्सकों को ही इसमें विशेष छूट दी गई है। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश के चिकित्सकों को 5वें वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुसार बढ़ा हुआ वेतनमान जारी किया गया है।

व्यापारियों के लिए टिन सेवा आरम्भ

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला में हिमाचल प्रदेश मूल्य संवर्धित कर अधिनियम और केन्द्रीय बिक्री कर अधिनियम के तहत राज्य में पंजीकृत डीलरों के लिए करदाता पहचान संख्या सुविधा (टिन) का शुभारम्भ मैसर्ज हीरा लाल सालिग राम, लोअर बाजार शिमला, मैसर्ज किरण स्टेशनरी मार्ट, लोअर बाजार शिमला, मैसर्ज आत्मा राम सुरेश कुमार सूद, छोटा शिमला, मैसर्ज सालिग राम हेम राज, गंज रोड़ शिमला, मैसर्ज एस. एम.मिनोचा एण्ड कम्पनी, शिमला, श्री रमेश सूद, अध्यक्ष व्यापार मण्डल शिमला और श्री इन्द्र सिंह महासचिव को टिन प्रमाण पत्र बांट कर किया।

मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि करदाता पहचान संख्या व्यापारियों के लिए विशेष लाभदायक सिद्ध होगी, क्योंकि यह उनके कर से सम्बन्धित सभी मामलों में उपयोगी होगी और इसके जारी होने से राज्य के डीलरों की लम्बे समय से चली आ रही एक मांग पूरी हो गई है। उन्होंने कहा कि टिन एक विशिष्ट संख्या है, जिसमें स्थाई लेखा संख्या अर्थात पैन की तरह 11 अंकों की संख्या प्रयोग में लाई जाती है। उन्होंने कहा कि टिन के माध्यम से डीलरों को एक विशिष्ट पहचान संख्या मिलेगी, जिसके माध्यम से वे बैरियरों एवं अन्य स्थलों पर आसानी से पहचाने जायेंगे। उन्होंने कर संग्रहण

30 जून, 2010 तक पंजीकृत सभी डीलरों को जारी होगा टिन

सुविधाओं को हाईटैक बनाने के लिए आबकारी एवं कराधान विभाग की सराहना की। उन्होंने कहा कि टिन संख्या के मिलने के बाद व्यापारी अन्य राज्यों से हिमाचल प्रदेश में अपना सामान आसानी से ला सकेंगे, क्योंकि कई अन्य राज्यों में टिन संख्या का होना अनिवार्य है। टिन संख्या के माध्यम से डीलरों के डाटा को अपडेट करने में सहायता मिलेगी, जिससे अगले वर्ष से प्रस्तावित सामान्य बिक्री कर के लागू होने के बाद सुविधा होगी। उन्होंने कहा कि देश भर में लागू TIN SYS प्रणाली के तहत टिन संख्या का होना अनिवार्य है। सभी पंजीकृत डीलरों को 30 जून, 2010 तक टिन संख्या जारी कर दी जाएगी।

प्रो. धूमल ने कहा कि टिन संख्या और पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी करने के लिए ऑन लाइन साफ्ट वेयर का निर्माण प्रदेश के आबकारी एवं कराधान विभाग द्वारा किया गया है और इसके माध्यम से डीलरों के पंजीकरण की जानकारी आबकारी एवं कराधान आयुक्त एवं सचिव आबकारी एवं कराधान को भी ऑन लाइन प्राप्त हो जाएगी। उन्होंने व्यापारी संघों और डीलरों से आग्रह किया कि वे आबकारी एवं कराधान विभाग को अपने बारे में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध करवायें ताकि उन्हें 30 जून, 2010 से पूर्व टिन संख्या जारी की जा सके। उन्होंने कहा कि टिन संख्या व्यापारियों एवं डीलरों के हित में है।

प्रधान सचिव आबकारी एवं कराधान श्री भीम सेन ने करदाता पहचान संख्या प्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि यह व्यापारियों के हित में है।

आबकारी एवं कराधान आयुक्त श्री जे.सी. शर्मा ने मुख्य मंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि विभाग द्वारा राज्य में व्यापारी मित्र वातावरण सुनिश्चित बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेशभर में स्थित आबकारी एवं कराधान कार्यालयों को उच्च तकनीक से लैस किया जा रहा है ताकि व्यापारियों को दक्ष एवं पारदर्शी सेवाएं प्रदान की जा सकें।

मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप, प्रधान सचिव वित्त श्री अजय त्यागी, अन्य वरिष्ठ अधिकारी और व्यापारी समुदाय के सदस्य इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्रकाशकः बी.डी. शर्मा, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला–171002, मुद्रकः राजीव कुमार शंकर, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला–171005, फोनः 2830378, प्रधान सम्पादकः बी.डी. शर्मा, वरिष्ठ सम्पादकः आर.एस. नेगी, सम्पादकः यादविन्दर सिंह चौहान, कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला–171005, फोन व फैक्सः 2633145, ई–मेलः girirajhp@gmail.com., girirajhp@yahoo.co.in OR girirajweekly 1978 @yahoo.co. in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)